पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्यू०/एन०पी०/318/2017-19

ओ३म्

श्रृण्वन्तुविश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-२२, अंकः-०२, अगस्त, सन्-२०१६, सं०-२०७६ वि०, दयानंदाब्द १६५, सृष्टि सं० १,६६,०८,५३,१२०; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

स्वतंत्रता दिवस पर विशेष

जिनकी सिंह गर्जना ने निजाम-हैदराबाद को घुटने टेकने को किया मजबूर

कुँवर सुखलाल आर्य मुसाफिर की चर्चा के बिना आजादी का इतिहास अधूरा है

-ठाकुर विक्रम सिंह

आर्य भजनोपदेशकों के योगदान की चर्चा के बिना देश की आजादी का इतिहास अधूरा है। वे आर्य समाज के भजनोपदेशक ही थे; जिन्होंने प्रथम चरण में खड़ताल और झाँझ बजाकर और फिर दूसरे चरण में हारमोनियम गले में लटकाकर ढोलक वादकों के साथ गाँव गाँव नगर नगर और गली गली में घूम घूमकर आजादी के पक्ष में वातावरण बनाया, स्वयं शत्रुओं के आघात सहे, जेल गये और जेल जाने वालों को तैयार किया तथा देश पर मर मिटने वालों के यश का विस्तार किया। विधर्मियों के अनेक अवरोधों के बावजूद आर्य समाज के उत्सवों में नगर कीर्तन में बैलगाड़ियों पर, ट्रकों पर, ताँगों पर मंच बनाकर बैठकर अपने जोशीले तरानों से जनता को मुग्ध करने वाले आर्य समाज के भजनोपदेशक ही थे। आर्य भजनोपदेशकों के शिखर पुरुष थे कुँवर सुखलाला आर्य मुसाफिर।

१० मई सन् १९५७ आर्य समाज खतौली के वार्षिकोत्सव पर मैंने पहली बार कुँवर सुखलाल आर्य मुसाफिर को सुना। उस समय मेरी आयु १४ वर्ष की थी और मैं सीताशरण कॉलेज में आठवीं श्रेणी में पढ़ता था। जब रात्रि ८ बजे मैंने सड़क पर लागों की भारी भीड़ को जाते हुए देखा तो मन में सवाल उठा क्या कहीं कुछ हो गया है। किसी से पूछा तो उत्तर मिला कि आर्य समाज का उत्सव हो रहा है और वहाँ कुँवर सुखलाल आर्य मुसाफिर का भाषण होगा। मेरी जिज्ञासा बढ़ी और मैं भी वहाँ पहुँच गया, देखें कैसा भाषण होता है।

उत्सव में बड़े-बड़े वक्ता पधारे थे, जिनमें ठाकुर यशपाल सिंह संसद सदस्य जिन्हें देखकर लगता था कि कोई राजस्थान से महाराजा पधारे हैं, प्रकाश वीर शास्त्री संसद सदस्य- सुन्दरता, स्वास्थ्य में अनुपम वाणी के जादूगर थे। आचार्य कृष्ण का अहिंसा पर पर व्याख्यान सुना। अंत में कुँवर सुखलाल जी को रात्रि के ११ बजे बोलने का अवसर मिला। कुँवर साहब एक घण्टा बोले। सभा के प्रारम्भ और अंत में दो गीत भी सुनाये। सच कहता हूँ बहुत वक्ता भजनोपदेशक, उपदेशक सुने पर ऐसा न कोई हुआ न होगा, वाणी वर्णन नहीं कर सकती। लेखनी लिख नहीं सकती।

श्री कुँवर सुखलाल जी आर्य मुसाफिर का नाम जिस्वा पर आते ही वह जमाना याद आ जाता है जब आर्य समाज और कांग्रेस अलग-अलग संस्था होते हुए भी ब्रिटिश शासन से भारत को स्वाधीन करने के लिए कंधा से कंधा मिलाकर संघर्ष कर रहे थे। कांग्रेस का नेतृत्व महात्मा गांधी कर रहे थे और आर्य समाज का नेतृत्व अमर शहीद स्वामी स्वामी श्रद्धानन्द कर रहे थे। अगर पं. जवाहरलाल को सुनने के लिए लाखों की भीड़ उमड़ पड़ती थी तो कुंवर सुखलाल को भी लाखों नर-नारी सुनने के लिए आते थे। पं.जवाहरलाल नेहरू का जन्म असाधारण रईस परिवार में हुआ था, शिक्षा भी उनकी उच्चकोटि की हुई। कुंवर सुखलाल जी का जन्म साधारण किसान परिवार में हुआ, शिक्षा भी साधारण वातावरण में हुई, मगर स्वामी दयानंद जी की शिक्षाओं का असर जो कुंवर सुखलाल जी पर हुआ उसके फलस्वरूप उनके दिल में देशभक्ति और समाज सुधार की सोती हुई आत्मा जागृत हो गई थी। वक्तृत्व कला और गायन विद्या; वह भी देशप्रेम की चासनी से ओत-प्रोत कुंवर साहब को ईश्वर की देन थी। नेहरू जी गाना नहीं जानते थे, परंतु उनकी आत्मा में देशप्रेम की धुन सदा बजती रहती थी। उस जमाने में नेहरू और सुखलाल जी ये दो देशभक्त वक्ता, आम जनता को जितना रिझा सकते थे, मोहिनी मंत्र की भांति जादू सा कर देते थे। उतना अन्य कोई नेता शहरी अनपढ़, देहाती जनता को मुग्ध शायद ही कर पाता हो।

श्री आनन्द चौहान के शब्दों में-"खुर्जा में कांग्रेस का एक बड़ा जलसा हो रहा था, जिसमें पं.नेहरू जी ने भाषण देना था। नेहरू जी किसी कारण से समय पर न पहुंचे तो जनता में बेचैनी बढ़ती देख लोगों ने कुंवर साहब से आग्रह किया कि आप ही जनता को रोक सकते हैं। कुंवर साहब ने स्टेज पर बैठते ही कहा- सुनो, भाइयों आप सब नेहरू जी के दर्शन करने आये हो। वह दर्शनीय हैं, दर्शन तो उन्हीं के करना, मैं तो

काला कलूटा हूँ, मेरे क्या दर्शन करने किंतु व्याख्यान आप मेरा ही सुनकर के जायें और सच्ची बात यह है कि नेहरू जी मेरे जैसा व्याख्यान दे भी नहीं सकते हैं। दर्शन उनके और व्याख्यान मेरा।"

कुंवर सुखलाल ने देशभक्ति के भाषण और गानों के कारण कई बार कठोर कारावास की सजा भुगती, मगर इससे उनका देश प्रेम कम नहीं हुआ बल्कि जैसे सोना अग्नि में तपकर कुंदन बन जाता है वैसे ही और चमकदार प्रभाव शाली सत्याग्रही बनकर निकलते थे। निजाम हैदराबाद की जेलों को भरने वाले कुंवर सुखलाल के भाषण और भजन सुनने वाले सत्याग्रही होते थे। जिनके सत्य और तप के आगे हठधर्मी निजाम को घुटने टेकने के लिए मजबूर होना पड़ा था।

श्री रामचन्द्र विकल, पूर्व सांसद के शब्दों में-"कुंवर साहब से मेरा बहुत निकट का संपर्क रहा। सन् १९५७ में पं.गोविन्द वल्लभ पंत मुख्यमंत्री उ.प्र. ने मुझसे कहा कि कुंवर सुखलाल से कहो- वे लोकसभा का चुनाव लड़ लें। उनकी बदौलत हमें काफी सीटें लोकसभा में मिल जायेंगी। मैं कुंवर जी के गांव गया, उनसे मिला और पंत जी का संदेश सुनाया। कुंवर साहब ने उत्तर दिया-'विकल साहब, मैंने जो कुछ किया वह देश के लिए किया। मुझे चुनाव नहीं लड़ना है। पंत जी को धन्यवाद कहें। उन्होंने मुझे याद किया।' उन्होंने कोई पद न आर्य समाज संगठन में कभी ग्रहण किया और न कांग्रेस सरकार में ही। इसी तरह जब भारत सरकार ने स्वाधीनता सेनानियों की पेंशन योजना चालू की, तब उन्होंने पेंशन लेने से इनकार कर दिया। मैंने आग्रह पूर्वक कलम हाथ में पकड़कर पेंशन के कागजात पर हस्ताक्षर कराये। मुझे मालूम था कि वे मेरा आग्रह नहीं टाल नहीं सकेंगे। मगर पेंशन की मांग करना अपनी सेवाओं का, जो उन्होंने देश को स्वाधीन कराने के लिए की, अपमान समझते थे।"

ठाकुर यशपाल सिंह, पूर्व सांसद लिखते हैं-"श्री पं.प्रकाशवीर शास्त्री राष्ट्रपति डॉ.राजेन्द्र प्रसाद जी को महाविद्यालय ज्वालापुर ले गये थे। राष्ट्रपति के बाद जनता को रोकना आसान न था, किंतु कुंवर साहब ने जनता को ही नहीं रोका, राष्ट्रपति को भी रोक लिया और पूरा व्याख्यान सुनने के बाद ही गद्गद् हो राष्ट्रपति वहां से उठे। भारत

(शेष पृष्ठ ३ पर)

विनय पीयूष

अविद्या और विद्या

अन्धन्तमः प्र विशन्ति येऽविद्यामुपासते।
ततो भूयऽइव ते तमो यऽउ विद्यायाꣳरताः।।

अन्यदेवाहुर्विद्यायाऽअन्यदाहुरविद्यायाः।
इति शुश्रुम धीराणां ये नस्तद्विचचक्षिरे।।

विद्यां चाविद्यां च यस्तद्वेदोभयꣳसह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते।।

(यजुर्वेद : अध्याय 40 मंत्र 12,13,14)

मात्र अविद्या की उपासना जो करते हैं,
घनान्धतम में वे प्रवेश करते रहते हैं;
उनसे अधिक अँधेरे, उनको घेरे रहते,
उपासना विद्या की केवल जो करते हैं!

विद्या और अविद्या पथ के श्रेय भिन्न हैं,
कर्म भिन्न, परिणाम भिन्न हैं, प्रेय भिन्न हैं;
इतना ही हम धीरों से सुनते आये हैं,
तरह-तरह से वह यह ही कहते आये हैं!

विद्या और अविद्या, दोनों को जो ध्याये,
जो साधे दोनों को, दोनों के फल पाए;
मृत्यु-बन्ध के भय से पार अविद्या करती,
अमृतत्व देती है विद्या, भव-भय हरती!

काव्यानुवाद : अमृत खरे

सम्पादकीय

सज गई बिन्दी

लोकसभा में एक ऐसा दृश्य भी आया, जिसने भारत माता को गर्वित होने का अवसर प्रदान कर दिया। यह दृश्य था- पश्चिम बंगाल से तृणमूल कांग्रेस के टिकट पर जीत कर आई- नुसरत जहाँ का। नुसरत जहाँ ने माथे पर सौभाग्य सूचक बिन्दी, माँग में सिन्दूर, गले में मंगलसूत्र तथा कोमल कलाइयों में चूड़ियाँ, कमनीय साड़ी में आवेष्ठित होकर लोकसभा में प्रवेश किया और लोकसभा अध्यक्ष के आगे बढ़कर चरण स्पर्श किये, उनका आशीर्वाद लिया तथा हिन्दी भाषा में शपथ ली और भारत माता की जय का उच्चारण भी किया। इस दृश्य को देखकर माँ भारती को एक योग्य पुत्री की माँ होने का गौरवपूर्ण अहसास अवश्य हुआ होगा। कहाँ श्वेत वस्त्रों और दाढ़ी में छिपी हुई शफीकुर्रहमान की वैचारिक कालिमा और कहाँ नुसरत जहाँ के हृदय की स्वच्छता, सादगीऔर वैचारिक समृद्धि। दोनों ही एक ही देश की सन्तानें हैं लेकिन कितना बड़ा फर्क है-

उपजहिं एक सँग जल माँही,
जलज जोंक जिमि गुन बिलगाही,
सुधा सुरा सम साधु असाधू
जनक एक जग-जलधि अगाधू।।

नुसरत जहाँ के इस सदाचरण से उलेमाओं का बौखलाना स्वाभाविक है क्योंकि उलेमाओं का काम ही है- हिन्दू-मुसलमानों- जो एक ही भारत माँ के बेटे बेटियाँ हैं- उनके मध्य नफरत घृणा फूट के बीज बोना। इन उलेमाओं को विद्वान् कैसे कहा जाय; इन्हें तो इंसान भी कहने में संकोच ही होता है। कवि श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' के शब्दों में-

छद्म इसकी कल्पना,
पाखण्ड इसका ज्ञान।
यह मनुष्य मनुष्यता
का घोरतम अपमान।।

नुसरत जहाँ ने कहा है कि मैं समावेशी भारतीय संस्कृति की रहनुमाई करती हूँ। सचमुच भारतीय संस्कृति समावेशी है अर्थात् इसमें सभी को आत्मसात् करने की, सभी को अपना बनाने की जबर्दस्त ताकत है। यह संस्कृति सभी को आकर्षित करती है। होली के रंग, दीपावली के चिराग किसे प्रफुल्लित नहीं करते हैं। माथे पर बिन्दी किसे आकर्षित नहीं करती। न जाने कितनी मुस्लिम महिलाएँ बिन्दी लगाना सौभाग्य सूचक और सौन्दर्य वर्द्धक मानती हैं। माथे पर सुंदर बिन्दी जब चमकती है तो नारी सौन्दर्य में अभिवृद्धि होती है। कविवर बिहारी लाल की मानें तो-

कहत सबै बेंदी दिये,
आँक दस गुनो होत।
तिय लिलार बेंदी दिये,
अगनित होत उदोत।

बिहारी लाल कहते हैं- किसी अंक के सामने बिन्दी बढ़ा दी जाय तो वह दस गुना हो जाता है। (१) के आगे बिन्दी (०) लगाने से १० और १० के आगे बिन्दी लगाने से १०० होता है किन्तु नारी के माथे पर बिन्दी अनेकों चन्द्रमाओं के सौन्दर्य के बराबर होती है। ताज्जुब है कि जो उलेमा अपनी भाषाओं में बिन्दी पर बिन्दी जड़ते हैं, एक नारी के माथे की बिन्दी का विरोध करते हैं।

सिन्दूर नारी के सुहाग का परिचायक चिन्ह है। सिन्दूर बिन्दी से रहित ललाट तो वैधव्य का सूचक होता है। नुसरत जहाँ सौभाग्यवती, सुहागवती रहना चाहती हैं तो किसी की छाती क्यों फटती है? यही बात मंगलसूत्र और चूड़ियों के बारे में भी है। 'मेरे हाथों में नौ नौ चूड़ियाँ हैं' फिल्मी गीत मशहूर है। अभिनय क्षेत्र में आने वाली मीनाकुमारी, मधुबाला, नरगिस, तबस्सुम इत्यादि मुस्लिम थीं, किन्तु उन्हें भारतीय संस्कृति ने इस तरह अपने में समेट लिया कि फर्क करना कठिन है कि कौन हिन्दू कौन मुस्लिम! फिर नुसरत भी तो फिल्मी नायिका हैं।

दूरदर्शन पर श्री रजत शर्मा ने 'आपकी अदालत' सम्बन्धी कार्यक्रम में १३,१४ तथा २०,२१ जुलाई को उपस्थित होकर नुसरत जहाँ ने जिस तरह बड़ी बेबाकी से शुद्ध हिन्दी में उत्तर दिये; उससे श्रोतासमूह बार बार आह्लादित हो रहा था, सारे भारत में इस कार्यक्रम को टीवी पर देखा और सराहा गया। नुसरत जहाँ के उत्तर और श्री रजत शर्मा के प्रश्नों को सुनकर ऐसा लगा मानों नुसरत जहाँ न हों नुसरत शर्मा हो। नुसरत के नाम के साथ शर्मा अधिक सुशोभित होता है। नुसरत ने अपनी चारित्रिक दृढ़ता का परिचय दिया है- उसने हिन्दू परिवार के सौम्य शालीन युवक श्री निखिल जैन से विवाह किया है। सम्पूर्ण जैन समाज ने नुसरत परिवार के आगमन का खुले दिल से स्वागत किया है। नुसरत के साथ साथ निखिल जैन का सम्पूर्ण जैन एवं हिन्दू समाज ने खुले दिल से स्वागत किया है।

माथे पर सौभाग्य सूचक बिन्दी, गले में हृदय को स्पर्श करता हुआ मंगलसूत्र, माँग में कुंकुम सिन्दूर धारण कर लोक सभा में प्रथम बार प्रवेश करना और लोकसभाध्यक्ष श्री ओम बिरला के चरणस्पर्श कर उनका आशीर्वाद लेना बड़ा ही शुभ सिद्ध हुआ। नुसरत जहाँ ने माथे पर बिन्दी क्या लगाई, उसके ठीक एक महीने बाद अमित शाह और नरेन्द्र मोदी ने भारत माता के ललाट पर कश्मीर रूपी केसर कुमकुम की बिन्दी जड़ दी।

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-१९८

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में नवम समुल्लास का अंश

ईश्वर की न्याय व्यवस्था

जब कचहरी में पहुँचते हैं तब सेठ जी इधर उधर जाने का विचार करते हैं कि प्राड्विवाक् (वकील) के पास जाऊँ वा रिश्तेदार के पास। आज हारूंगा वा जीतूँगा न जाने क्या होगा? और कहार लोग तमाखू पीते परस्पर बातें चीतें करते हुए प्रसन्न होकर आनन्द में सो जाते हैं। जो वह जीत जाय तो कुछ सुख और हार जाय तो सेठ जी दुःखसागर में डूब जाय और वे कहार जैसे के वैसे रहते हैं।

इसी प्रकार जब राजा सुन्दर कोमल बिछौने में सोता है तो भी शीघ्र निद्रा नहीं आती और मजूर कंकर पत्थर और मिट्टी ऊँचे नीचे स्थल पर सोता है उसको झट ही निद्रा आ जाती है। ऐसे ही सर्वत्र समझो।

(उत्तर) यह समझ अज्ञानियों की है। क्या किसी साहूकार से कहें कि तू कहार बन जा और कहार से कहें कि तू साहूकार बन जा, तो साहूकार कभी कहार बनना नहीं और कहार साहूकार बनना चाहते हैं। जो सुख दुःख बराबर होता तो अपनी-अपनी अवस्था छोड़ नीच और ऊंच बनना दोनों न चाहते।

देखो! एक जीव विद्वान्, पुण्यात्मा, श्रीमान् राजा की राणी के गर्भ में आता और दूसरा महादरिद्र घसियारी के गर्भ में आता है। एक को गर्भ से लेकर सर्वथा सुख और दूसरे को सब प्रकार दुःख मिलता है। एक जब जन्मता है तब सुन्दर सुगन्धियुक्त जलादि से स्नान, युक्ति से नाड़ी छेदन, दुग्धपानादि यथायोग्य प्राप्त होते हैं। जब वह दूध पीना चाहतो है तो उसके साथ मिश्री

आदि मिलाकर यथेष्ट मिलता है। उसको प्रसन्न रखने के लिये नौकर चाकर खिलौना सवारी उत्तम स्थानों में लाड़ से आनन्द होता है। दूसरे का जन्म जंगल में होता, स्नान के लिये जल भी नहीं मिलता, जब दूध पीना चाहता तब दूध के बदले में घूंसा थपेड़ा आदि से पीटा जाता है। अत्यन्त आर्तस्वर से रोता है। कोई नहीं पूछता। इत्यादि जीवों को बिना पुण्य पाप के सुख दुःख होने से परमेश्वर पर दोष आता है।

दूसरा जैसे बिना किये कर्मों के सुख दुःख मिलते हैं तो आगे नरक स्वर्ग भी न होना चाहिये। क्योंकि जैसे परमेश्वर ने इस समय बिना कर्मों के सुख दुःख दिया है वैसे मरे पीछे भी जिसको चाहेगा उसको स्वर्ग में और जिसको चाहे नरक में भेज देगा। पुनः सब जीव अधर्मयुक्त हो जायेंगे, धर्म क्यों करें? क्योंकि धर्म का फल मिलने में सन्देह है। परमेश्वर के हाथ हैं, जैसी उसकी प्रसन्नता होगी वैसा करेगा तो पापकर्मों में भय न होकर संसार में पाप की वृद्धि और धर्म का क्षय हो जायेगा। इसलिये पूर्व जन्म के पुण्य पाप के अनुसार वर्त्तमान जन्म और वर्त्तमान तथा पूर्वजन्म के कर्मानुसार भविष्यत् जन्म होते हैं।

(प्रश्न) मनुष्य और अन्य पश्वादि के शरीर में जीव एक सा है वा भिन्न-भिन्न जाति के?

(उत्तर) जीव एक से हैं परन्तु पाप पुण्य के योग से मलिन और पवित्र होते हैं।

(प्रश्न) मनुष्य का जीव पश्वादि में और पश्वादि का मनुष्य के शरीर में और स्त्री का पुरुष के और पुरुष का स्त्री के शरीर में जाता आता है वा नहीं।

(उत्तर) हां! जाता आता है। क्योंकि जब पाप बढ़ जाता पुण्य न्यून होता है तब मनुष्य का जीव पश्वादि नीच शरीर और जब धर्म अधिक तथा अधर्म न्यून होता है तब देव अर्थात् विद्वानों का शरीर मिलता और जब पुण्य पाप बराबर होता है तब साधारण मनुष्य जन्म होता है।

(-क्रमशः)

वेदांजलि

उल्लासमय जीवन की रूपरेखा

❑ पं. शिव कुमार शास्त्री
भू.पू. संसद सदस्य

इन्द्र श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि चित्तिं दक्षस्य सुभगत्वमस्मे।
पोषं रयीणामरिष्टिं तनूनां स्वाद्मानं वाचः सुदिनत्वमह्नाम्।।

(ऋग्वेद : 2/21/6)

शब्दार्थ-

हे **(इन्द्र)** परमैश्वर्य के भण्डार प्रभो! **(अस्मे)** हमारे लिए **(श्रेष्ठानि)** उत्तम **(द्रविणानि)** धन **(दक्षस्य)** नैपुण्य और बल की **(चित्तिम्)** प्रसिद्धि **(सुभगत्वम्)** सौभाग्य **(रयीणाम्)** ऐश्वर्यों की **(पोषम्)** पुष्टि **(तनूनाम्)** शरीरों की **(अरिष्टिम्)** नीरोगता **(वाचः स्वाद्मानम्)** वाणी की मधुरता **(अस्नाम्)** दिनों की **(सुदिनत्वम्)** शोभनता **(धेहि)** प्रदान कर!

व्याख्या-

सफल और उल्लासमय जीवन के लिए जितनी वस्तुओं की आवश्यकता है, वे सब इस मंत्र में गिना दी गई हैं। भक्त ने प्रभु को 'इन्द्र' शब्द से पुकार कर फिर अपनी आवश्यकता की सूची प्रस्तुत की है। माँगा उसी से जाता है, जिसके पास याचित वस्तु हो और आवश्यकता से अधिक हो। इसलिए यहां याचना इन्द्र से की गई है। संस्कृत व्याकरण की दृष्टि से इन्द्र शब्द 'इदि' धातु से बना है। इदि धात्वर्थ लिखा है- परम ऐश्वर्य। ज्ञान, बल, उत्तम स्वास्थ्य और रुपया पैसा, ये सभी ऐश्वर्य हैं, किन्तु परम ऐश्वर्य की कोटि में आने के लिए इनमें कुछ विशेषता अपेक्षित है। वह ज्ञान जो दो शब्दों तक सीमित है, बहुत कुछ जानकारी देता हुआ भी जाननेवाले को दुःखसे नहीं छुड़ाता, अपितु और दुःख में धकेलता है।

परम ऐश्वर्य में उस ज्ञान को ही पुकारा जा सकता है जो मनुष्य को सांसारिक क्लेशों से छुड़ा दे। शक्ति भी प्रशंसा के योग्य वही है, जो दुःखियों के कष्टनिवारण के लिए अन्याय और शोषण का प्रतिरोध करे। उसी प्रकार धनरूपी ऐश्वर्य भी परम वही होगा जो विपन्न और अभावग्रस्तों का पालन करे। प्रभु में ये तीनों प्रकार के परमैश्वर्य हैं, अतः हे इन्द्र! परमैश्वर्य के भण्डार प्रभो! "श्रेष्ठानि द्रविणानि धेहि"-तू मुझे श्रेष्ठ, अत्यन्त पवित्र, जिसको धर्मपूर्वक अर्जित किया हो, ऐसा "द्रविणानि" धन, ऐश्वर्य दे! अधर्म और अन्याय से उपार्जित अर्थ, अनर्थ है, वह तो मेरे पतन का कारण होगा, उत्थान का नहीं।

इससे आगे मंत्र में प्रार्थना की कि मुझे धन के साथ दक्षता और बल भी दो! बिना दक्षता और निपुणता के धन का सदुपयोग नहीं कर पाऊँगा। दक्ष का दूसरा अर्थ बल भी है। धन की रक्षा के लिए बल भी अपेक्षित है। ये सब चीज़ें न केवल मेरे निर्वाह का साधन बनें, अपितु "सुभगत्वम्"- मेरे सौभाग्य और यश का कारण बनें। यशस्विता और कीर्ति ही तो जीवन है-"यस्य कीर्तिः स जीवति।" मेरे नैपुण्य पर दूसरे लोग जीवन की दिशा प्राप्त करने की आशा करें और मेरे बल के संरक्षण में निर्भय हों, यह सौभाग्ययुक्त ख्याति मेरी हो। इसके आगे विशेषण आया "रयीणां पोषम्"-आय के स्रोत स्थायी हों। व्यय करते समय धन के क्षीण होने की चिन्ता न हो, आवश्यक व्यय को मैं निश्चिन्त हो प्रसन्नता से वहन कर सकूँ। इसके आगे "तनूनाम् अरिष्टिम्"-मुझे स्वस्थ शरीर मिले। शरीर यदि रोगी हुआ तो मैं जीवन का बोझ ढोनेवाला बनूँगा, उसका आनन्द न ले सकूँगा।

इससे अगली प्रार्थना और भी महत्वपूर्ण है कि-"स्वाद्मानं वाचः"-मुझे वाणी की मधुरता दीजिये! इस सद्गुण के बिना धन, बल, नैपुण्य और सुन्दर स्वास्थ्य भी मनुष्य को सुख और शान्ति नहीं दे सकते। कठोर वाणी की अग्नि में सब कुछ भस्म हो जाता है।

अतः इस मंत्र में मधुर वाणी माँगी गई। नम्रतापूर्वक मधुर वाणी जादू का सा प्रभाव करती है। इसके लिए महाभारत का एक प्रसंग देखिए-

युद्ध प्रारम्भ ही होने वाला था कि सेना के बीच खड़े होकर युधिष्ठिर ने ऊँचे स्वर से पुकारके कहा- जो हमें ठीक मार्ग पर समझकर हमसे मिलने का इच्छुक हो, मैं उसे गले लगाने को उद्यत हूँ।

दुर्योधन का भाई युयुत्सु युधिष्ठिर के इस व्यवहार को देखकर और मुग्ध होकर धर्मराज कुन्ती-पुत्र को बोला-

अहं योत्स्यामि भवतः संयुगे धृतराष्ट्रजान्।
युष्मदर्थं महाराज यदि मां वृणुषेऽनघ।।

-मैं आपकी ओर से कौरवों से लड़ने को उद्यत हूँ यदि आप मुझे अपना सकें।

युधिष्ठिर ने प्रेमपूर्वक उत्तर दिया-

वृणोमि त्वां महाबाहो युद्धयस्व मम कारणात्।
त्वयि पिण्डश्च तन्तुश्च धृतराष्ट्रस्य दृश्यते।।

-हे महाबाहो! मैं तुम्हें स्वीकर करता हूँ। तुम युद्ध में हमारी सहायता करो। धृतराष्ट्र के नामलेवा तुम ही रहोगे, यही प्रतीत होता है।

दुर्योधन का सहोदर भाई युयुत्सु महाभारत युद्ध के अन्त तक पाण्डवों के साथ अपने सगे भाइयों से लड़ता रहा। यह प्रभाव मधुर भाषण और न्यायपूर्ण व्यवहार का होता है। इसलिए मंत्र में मीठी वाणी की प्रार्थना की। इन सब के अन्त में एक और माँग की-"सुदिनत्वमह्नाम्"-मेरा प्रत्येक दिन आह्लादमय हो! जबतक जिऊँ सानन्द और प्रसन्न होकर जिऊँ। *('श्रुति सौरभ' से साभार)*

दयानन्द चरितामृतम्

-डॉ.गणेश दत्त शर्मा-

(प्रथमः सर्गः)

छन्द १०-१२

तयोर्द्वयोः प्राक्चरितैः सुकर्मभिः
व्रतोपवासैश्च सुपुत्रकामिनोः।
सुतो हि जज्ञे शुभलक्षणान्वितः
ययौ भृशं येन च तौ प्रसन्नताम्।।

सुपुत्र की कामना वाले उन दोनों के पूर्वजन्मकृत्त सत्कर्मों तथा व्रत व उपवासों के आधार पर शुभ लक्षणों वाला पुत्र उत्पन्न हुआ, जिसके कारण वे अत्यन्त प्रसन्नता को प्राप्त हुए।

करिष्यते मंगलकारिणी शुभा
गवेषणाऽनेन शिवस्य मूलतः।
ध्रुवं कृतं नाम परम्पराविदा
तदास्य पित्रा खलु मूलशंकरः।।

"इस पुत्र के द्वारा मूलतः शुभ एवं मंगल करने वाली शिवजी की गवेषणा की जाएगी"-इसीलिए मानों उसके परम्पराविद् पिता ने उसका नाम मूलशंकर रखा।

स शैशवे रम्यतरैः सुचेष्टितैः
मनोहरैरस्फुटभाषितैस्तथा।
स्वभावसौम्यैर्हसितैश्च हासिभिः
अचूचुरच्चित्तमहो कुटुम्बिनाम्।।

उस बालक (मूलशंकर) ने बचपन में अपनी अत्यन्त सुन्दर चेष्टाओं तथा मनोहर व अस्पष्ट बोलियों द्वारा एवं स्वभावतः सौम्य व मनोहारी हास-परिहासों द्वारा अपने कुटुम्बियों के चित्त को चुरा लिया।

('दयानन्द चरितामृतम्' से साभार, क्रमशः)

-साहिबाबाद, गाजियाबाद-२०१००५

(पृष्ठ 1 का शेष...)

जिनकी सिंह गर्जना...

के प्रधान मंत्री पं.जवाहरलाल नेहरू भी महा विद्यालय के समारोह में पधारे। उस समय प्रश्न उठा कि नेहरू जैसे पश्चिमी सभ्यता में रंगे व्यक्ति के सामने अब कौन व्याख्यान दे। प्रकाशवीर शास्त्री की तेज आंखोंने कुंवर साहब को वहां ला खड़ा किया। नेहरू जी ने कहीं जाना था, लेकिन कुंवर साहब को सुनकर ही गये और कोई न हिला, जब तक कुंवर साहब बोलते रहे।"

श्री बाल दिवाकर हंस लिखते हैं-"यह महत्त्वपूर्ण संस्मरण मेरे पूज्य नाना श्री पं.मेधराज जी पटवारी, छपरौली, जिला मेरठ ने मेरे बचपन में मुझे सुनाया था। बात इस तरह थी-कस्बा बड़ौत में ईसाइयों ने कोई बहुत बड़ा संस्थान खोलने हेतु (जो ईसाइयत के प्रचार-प्रसार का केंद्र होता) एक लाख ईंटें मंगाकर निर्माण कार्य को प्रारंभ करना चाहा। सारे क्षेत्र के गणमान्य, चौधरी केहर सिंह छपरौली और उनके सहयोगी अनेक आर्यजन इस संस्कृति विरोधी उपक्रम से चिंतित थे। अचानक उन्हें पता चला कि कुंवर सुखलाल जी अपने किसी पूर्व निर्धारित कार्यक्रम को भुगताने हेतु एस.एस.लाइट रेलवे से शामली जा रहे हैं। तत्काल छपरौली तथा सबगा आर्य समाज के सभासद बड़ौत स्टेशन पर पहुंचकर इंजन के सामने सत्याग्रही के रूप में खड़े हो गये और रेल चलने न दी। उधर कई व्यक्तियों ने गाड़ी के डिब्बे में कुंवर खुखलाल जी को खोज निकाला और उन्हें सारी घटना से अवगत कराया। श्री सुखलाल जी वहीं उतर पड़े। बड़ौत में कुंवर साहब के आने की मनादी करा दी गई। कुछ साइकिल सवार गांवों में पहुंचकर सूचना दे आयें फिर क्या था लोग उस स्थान की ओर दौड़ पड़े जहाँ कुंवर साहब का व्याख्यान होना था।

एक घंटे के अपने आह्वान में कुंवर सुखलाल जी ने आर्यों को संबोधित करते हुए कहा-आर्य भी क्या लाचार और निराश हो सकते हैं। यह कम से कम मुझे समझ नहीं आता? आर्यों, वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार हेतु क्या तुम अपना संस्थान नहीं खोल सकते? थोड़ा खाओ, अधिक दान करो। धर्म बचेगा ही नहीं वह बढ़ेगा भी। याद रक्खो-'बात बातों से हरगिज बनेगी नहीं, मर मिटो, बात पर, बात की बात है।' का अत्यंत प्रभावोत्पादक भजन सुनाया। सभा समाप्ति पर जनता एक लाख ईंटें थोड़ी-थोड़ी करके उठा ले गई और अगले दिन ही जाट वैदिक कालेज की स्थापना बड़ौत में हो गई। ऐसे थे कुंवर सुखलाल जी।

पूज्य मालवीय जी के महात्मा हंसराज से बड़े मृदु संबन्ध थे। एक दिन लाहौर में मालवीय जी ने महात्मा हंसराज से पूछा- 'यह कुंवर सुखलाल कौन है?' पूज्य महात्मा जी ने उत्तर दिया कि यह एक नवयुवक, आर्य प्रचारक है, कोकिल कंठ है, इसका गायन-गजल कवितायें और भजन सुनने के लिये बेशुमार जनता उमड़ पड़ती है तब वहां जाति-पांति, धर्म, आयु, स्त्री, पुरुष, बाल का कोई भेद नहीं रहता, लोग गर्मी-सर्दी की भी परवाह नहीं करते। यदि वह रात्रि को २ बजे भी बोलने बैठ जायें तो लोग कड़ाके की सर्दी में भी रजाई छोड़कर दौड़ पड़ेंगे। इसने अपने प्रचार के कारण पेशावर से बम्बई तक धूम मचा दी है। पूज्य मालवीय जी ने महात्मा जी से पूछा कि रात्रि को आपके यहां कितनी उपस्थिति थी, तो महात्मा जी ने कहा कम से कम ५०,००० की हाजिरी होगी और उन दिनों माइक न थे। कुंवर साहब बिना माइक ही बोलते थे और सभी जनता तक उनकी आवाज पहुंचती थी। पूज्य मालवीय जी ने कुंवर साहब से मिलने की इच्छा प्रकट की तो महात्मा जी ने कहा कि सायं ४ बजे यहीं डी.ए.वी. कालिज में आपकी भेंट कुंवर साहब से करा दी जायगी। मालवीय जी ने अपने स्थान पर चले गये। सायं ४ बजे डी.ए.वी.कालिज में कुंवर सुखलाल से मिलने के लिये पुनः मालवीय जी पधारे तो कुंवर साहब से उनकी भेंट ऐतिहासिक थी। कुंवर साहब ने मालवीय जी के चरण छुए और पूज्य मालवीय जी ने कुंवर साहब को आशीर्वाद दिया।

राहुल सांकृत्यायन ने लिखा है कि-'मुझे कुछ कर गुजरने की प्रेरणा कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर के गीतों से मिली।'

देश की स्वाधीनता के बाद जब उ.प्र. के मुख्यमंत्री श्री गोविंद वल्लभ पंत ने आपके सामने आपकी सेवा को दृष्टिगत रखते हुए लोक सम्पर्क विभाग में सर्वोच्च पद स्वीकार करने की प्रार्थना की तब आपने यह कहकर ठुकरा दिया था कि हमने देशसेवा पुरस्कार के उद्देश्य से नहीं की थी बल्कि मेरे आचार्य दयानन्द सरस्वती ने इसे हमारा धर्म कहा है। यह ध्यान रहे कि इनको उस कार्य के फलस्वरूप पांच सौ रुपये प्रतिमास के साथ कार तथा कोठी भी देने का वायदा किया गया था। पाठकगण, क्या आप कुंवर जी के त्याग का अनुमान कर सकते हैं? जबकि उस समय अंगुली के पके नाखून कटाकर शहीदों की पंक्ति में नाम लिखाने वालों ने खूब गहरे हाथ रंगे थे।

कुंवर साहब महात्मा गांधी के बड़े भक्त थे। इनके महात्मा गांधी के विषय में भाषण और भजन बड़े रोमांचकारी और रोंगटे खड़े करने वाले होते थे। जब ये सीतापुर जेल से छूटकर आये तो इनका भाषण व गायन गुरुकुल सिकन्दराबाद में हुआ था, इनके एक रसिया की कुछ लाइन नीचे दे रहा हूँ-

आकर गांधी ने भारत में कैसा चक्र चलायो है।
चरखे की चूं-चूं से सारो जग थर्रायो है।
अंग्रेजों पर पड़ी तबाई, शोक लंदन में छायो है।

लेकिन जब हैदराबाद का सत्याग्रह हुआ जो आर्य समाज द्वारा चलाया गया था, उस वक्त महात्मा गांधी को संबोधित करते हुए कुंवर साहब ने निम्न कविता कही-

ये क्या हैदराबाद में हो रहा है।
महशर का आलम बपा हो रहा है।
हमारी हिमायत न लो प्यारे बापू।
मगर यह तो कह दो गजब हो रहा है।

ये थी कुंवर साहब की ओजस्वी वाणी। निर्भीक विचारधारा, जो महात्मा गांधी को भी झकझोर सकती थी। स्मरण रहे गांधी जी किसी वजह से इस ऐतिहासिक सत्याग्रह के बारे में मौन थे।

कुंवर सुखलाल जी आर्य मुसाफिर की इस गौरवमयी गाथा पर सारे आर्य जगत को स्वाभिमान है, वे जहाँ सच्चे अर्थों में एक देशभक्त थे, वहाँ उसी प्रकार वे मानव मात्र के, पीड़ित शोषित समाज के, एक महान प्रवक्ता थे, मंचों पर जब उनकी ओजस्विनी वाणी सदियों से पीड़ित मानवों के ऊपर हो रहे अत्याचारों का वर्णन करती थी तो एक बार पत्थर दिल भी पसीज जाते थे, ये हमेशा ही शोषितों के अधिकारों के लिये संघर्ष का आहवान करते रहे थे, इस दृष्टि से इनके लिए कोई भी मनुष्य पराया नहीं रहा था। इनका कार्य आने वाली पीढ़ियों के लिए एक ज्वलंत उदाहरण तथा प्रेरक रहेगा।

('सिंह गर्जना' सम्पादित अंश)

22वें वर्ष में प्रवेश के अवसर पर विशेष

'आर्य लोक वार्ता' के प्रमुख उन्नायक

'आर्य लोक वार्ता' के २२वें वर्ष में प्रवेश के अवसर पर यह स्वाभाविक ही है कि मैं उन अग्रज और दिवंगत विभूतियों का नमन करूँ जो आज यद्यपि इस दुनिया में नहीं हैं किन्तु अपने पीछे अक्षय कीर्ति कथा छोड़ गये हैं। जिन्होंने 'आर्य लोक वार्ता' को स्थापित किया और आगे बढ़ाया तथा पल पल पर उसके सुख दुःख का लेखा जोखा संभालते भी रहे। वस्तुतः २१ वर्ष पूर्ण कर 'आर्य लोक वार्ता' को २२वे वर्ष तक पहुँचाने में उनके उद्योग, सहायता और सद्भावना की चर्चा न करना अकृतज्ञता होगी।

ऐसी विभूतियों से सर्वप्रथम नाम है- श्रद्धास्पद श्री रामेश्वर दयाल कटियार

(एम.एस.१३७, सेक्टर-डी, अलीगंज, लखनऊ) का। श्री आर.डी.कटियार से यों तो मेरा प्रथम परिचय उस समय हुआ था; जब मैं उनके आवास पर आर्य समाज अलीगंज (महावीरगंज) की ओर से यज्ञ कराने हेतु गया था किन्तु परिचय को प्रगाढ़ता में परिवर्तित करने का माध्यम बने अलीगंज, वैदिक सत्संग के संयोजक श्री पाल प्रवीण जी। पाल प्रवीण जी के स्नेहाकर्षण और आमंत्रण पर वैदिक सत्संग में प्रति बृहस्पतिवार को प्रवचन करने मैं पहुँचने लगा; जहाँ श्री कटियार से मेरी भेंट हो जाती थी। वे नियमित रूप से सत्संग में पहुँचते थे, प्रवचन को ध्यानपूर्वक सुनते थे, सराहना करते थे तथा यथावश्यकता सुझाव भी देते थे। उनके जैसे श्रोता की उपस्थिति के कारण मुझे अच्छा स्वाध्याय तथा तैयारी भी करने का अवसर मिलता था। वे आर्य वैदिक सिद्धान्तों के पूर्ण ज्ञाता और मर्मज्ञ विद्वान् थे तथा मुझे समझने और सराहना करने में कोई गलती नहीं करते थे। 'आर्य लोक वार्ता' का एक एक शब्द वे पढ़ते थे। वे व्यर्थ के आडम्बर या लफ्फाजी के खिलाफ थे। दिन ब दिन यह स्नेह बढ़ता गया तथा उन्होंने अपनी पुत्री डॉ.वीना कटियार (मनीषा नर्सिंग होम, फर्रूखाबाद) से कहा कि तुम साईंधाम, शिरिडी या बालाजी इत्यादि में ढेरों रुपये दे आती हो किन्तु 'आर्य लोक वार्ता' जैसे वेद प्रचारक पत्र की क्यों नहीं सहायता करती? उन्होंने वीना जी के अलावा स्वयं 'आर्य लोक वार्ता' की समय समय पर आर्थिक सहायता की तथा उनका कड़ा निर्देश था कि उनके दान का यश गायन कहीं भी नहीं होना चाहिए। 'अमृत पुत्रो, सुनो!', 'वैदिक यज्ञ प्रकाश' तथा 'प्रमोद गीतांजलि' जैसे आर्य लोक वार्ता प्रकाशन उन्हीं की देन हैं। श्री आर.डी.कटियार के सम्बंध में मैंने कतिपय पंक्तियाँ 'अमृत पुत्रो, सुनो!' पुस्तक की भूमिका में लिखी हैं, उन्हें अवश्य ही पढ़ना चाहिए। स्व.कटियार की सहधर्मिणी श्रीमती प्रमोद कुमारी जी उनके पदचिन्हों पर आज भी चलती आ रही हैं।

अलीगंज वैदिक सत्संग की ही उपज थे स्वनामधन्य पन्नालाल तिवारी, जो

डी.ए.वी.इंटर कालेज लखनऊ से सेवानिवृत्त हुए थे। श्री तिवारी सुविख्यात पंडित रासबिहारी तिवारी (संस्थापक आर्य समाज, गणेशगंज) की वंश परम्परा के आलोक दीप थे। स्वाध्यायनिपुण श्री पन्नालाल तिवारी भी मेरे विचारों तथा 'आर्य लोक वार्ता' के भावुक भक्त थे तथा वैदिक विचारधारा के मर्मज्ञ थे। 'आर्य लोक वार्ता' का एक एक अक्षर ध्यानपूर्वक पढ़ते थे- प्रशंसा के साथ ही आवश्यक सुझाव भी देने में नहीं चूकते थे। उनकी विशेषता थी कि यदि कोई अच्छी बात उनके मन को लग जाती थी तो वे मुझे बुलाकर पुरस्कृत भी करते थे। उनके यहाँ 'आर्य लोक वार्ता' का प्रत्येक अंक सहेज कर फाइल के रूप में रखा हुआ मैंने देखा था। एक बार मैंने छात्र जीवन में अपने गुरुवर श्री कृष्णकिशोर जी की एक नसीहत का उल्लेख अपने एक लेख में करते हुए गुरुवर के ही एक शब्द 'धड़ल्ले से' का उल्लेख किया था। इस शब्द प्रयोग से वे इतने खुश हुए कि मुझे घर पर बुलाया और पुरस्कृत किया और कहा किसी से कहना मत- यह मैं आत्मसंतोष के लिए कर रहा हूँ। तिवारी जी को जो भजन बेहद प्रिय था, वह था-'हे नाथ अब तो ऐसी दया हो' तथा प्रार्थना 'नमस्ते सतेते जगत्कारणाय'। जिस कोटि के वे भक्त थे उसी के अनुरूप वे शांतिपूर्वक इस जग से विदा हुए। मुझे उनकी अन्त्येष्टि एवं शांतियज्ञ पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न कराने में आत्मिक शान्ति का अनुभव हुआ।

इसी क्रम में तीसरा और महत्वपूर्ण नाम है-श्री जगदीश लाल खत्री जी

(सेवानिवृत्त पुलिस उपाधीक्षक) का। आर्य समाज चन्द्रनगर को श्री खत्री जी के नेतृत्व का सुअवसर मिला। वे एक निर्लेप, निरभिमानी और बड़े ही योग्य व्यक्ति थे। सद्गुणों की खान थे। आर्य समाज चन्द्रनगर का उन्होंने नवीनीकरण कराया और आर्य समाज चन्द्रनगर का जो भव्य और दिव्य रूप आज आप देखते हैं, वह खत्रीजी जी की देन है। 'आर्य लोक वार्ता' से प्रभावित और आकृष्ट होकर खत्री जी मेरी ओर उन्मुख हुए। उनका कहना था-'मेरे पास आर्य जगत के लगभग सभी प्रमुख पत्र-पत्रिकाएँ आती रहती हैं किन्तु जो नवीनता और श्रेष्ठता 'आर्य लोक वार्ता' में है- वह अन्य किसी में नहीं।' 'आर्य लोक वार्ता' का प्रथम सम्मान समारोह आर्य समाज लाजपतनगर चौक में श्री खत्री जी को सम्मानित करने हेतु आयोजित किया गया था। उन्होंने मुझसे कहा था- 'जो भी आपको सहयोग-सहायता की जरूरत हो, वह मुझे निःसंकोच कहिए।' भला ऐसी बात आज के युग में कोई कहने का साहस कैसे कर सकता है? खत्री जी ने जो कहा- वैसा ही किया। प्रतिवर्ष वे मेरी अपेक्षा और आशा से अधिक सहयोग करते थे; बिना प्रचार या यश की कामना के। खत्री जी का कहना था-'जो भी कार्यक्रम आपको करना हो, आर्य समाज चन्द्रनगर में कीजिए। सारा व्ययभार मैं उठाऊँगा। आखिर आप भी वेद प्रचार ही तो कर रहे हैं।' आर्य समाज चन्द्र नगर में मैंने श्री पाल प्रवीण के सम्मान का कार्यक्रम आयोजित भी किया। खत्री जी ने जाते जाते आर्य समाज चन्द्रनगर के प्रधान पद पर श्री रणसिंह को प्रतिष्ठित किया तथा 'आर्य लोक वार्ता' का दायित्व भी उन्हीं को सौंपा था। आज भी श्री रणसिंह और श्री अरुण अमिता विरमानी खत्री जी के पदचिन्हों का अनुसरण करते चले आ रहे हैं।

(शेष पृष्ठ 4 पर)

शुभाकांक्षा

जुलाई २०१६ के अंक में सम्पादक महोदय ने एक समस्या की ओर ध्यान आकर्षित किया है। इस बार मैं भी अपने को इसी विषय पर सीमित रखूँगा। हमारे देश में अल्पसंख्यक केवल मुसलमान ही चर्चा का विषय बनते हैं। अन्य अल्पसंख्यक सिक्ख, जैन, बौद्ध, ईसाई की चर्चा प्रायः नहीं होती। यदाकदा ईसाई बन्धु भी अपनी नाराजगी व्यक्त कर देते हैं। देश में मुसलमान भाइयों के बहुत बड़े वर्ग को न तो 'वंदे मातरम्' से कोई गुरेज है और न 'भारत माता की जय' से परहेज है। देश के हजारों मदरसों में स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस के समारोहों में राष्ट्रगान पूरी श्रद्धा के साथ गाया जाता है। ये मुसलमान भाई हिन्दुओं के त्योहारों में अपनी सक्रिय भूमिका उसी प्रकार निभाते हैं, जैसे हिन्दू भाई मीठी ईद में पूरे उत्साह के साथ शरीक होते हैं। अभी काँवड़ यात्रा के शिवभक्त हिन्दुओं की अनेक स्थानों पर मुसलमानों ने वैसी ही सेवा की है, जैसे हिन्दू करते हैं। वाराणसी में तो इन उदार मुसलमानों ने काँवड़ यात्रियों के पैर धोकर मिसाल कायम की है। हिन्दुओं को इसकी मुक्त कंठ से प्रशंसा करनी चाहिए। अतः यह सकारात्मक सोच देश हित में है। मुसलमानों के दूसरे वर्ग में चन्द राजनेता हैं, जो सदैव धारा के विपरीत बोलकर सुर्खियाँ बटोरने और वोट पक्की करने के लिए बेहूदी बातें कह देते हैं। शफीकुर्रहमान, आजम खाँ या औवैसी जैसे लोगों को नजरअन्दाज करना चाहिए जिससे दुःखी होकर ये भौंकना बन्द कर देंगे। इस समस्या का एक सरल निदान है। सरकार कानूनन यह बाध्य कर दे कि चुनाव के लिए पर्चा भरते समय प्रत्याशी को घोषणा करनी होगी कि मैं राष्ट्रगान, राष्ट्रगीत, राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय प्रतीकों का सम्मान करूँगा। दूसरे संसद या विधानमंडल के नव निर्वाचित सदस्य से शपथ ग्रहण के समय इस प्रतिज्ञा को पुनः पाठ कराया जाय। मुसलमानों में ये चंद राजनेता हर सुधार का विरोध करते हैं किन्तु तीन तलाक तो अब इनको भी नकारना होगा।

-डॉ.चन्द्रपाल शर्मा

सहयोग, सर्वोदय नगर, पिलखुआ-245304

***

'आर्य लोक वार्ता' जुलाई २०१६ का अंक मिला। अंक के मुखपृष्ठ पर प्रख्यात ऐतिहासिक उपन्यासकार श्री वृन्दावन लाल वर्मा कृत 'झाँसी की रानी' विषयक प्रस्तुत अंश अतीव वीरोत्तेजक है, जो बुन्देलखण्ड की ओजस्वी परम्परा की सांस्कृतिक झलक प्रदर्शित करता है। सच ही वरेण्य है- बुन्देलखण्ड का पानी, जिसे बनाये रखना परमावश्यक है। 'विनय पीयूष' के अन्तर्गत यजुर्वेदीय मंत्र का हिन्दी अनुवाद अतीव सराहनीय है। अच्छा होता यदि 'सम्भूति'-'असम्भूति' जैसे शब्दों का अर्थ भी स्पष्ट किया जाता। 'तीसरी कसम' शीर्षक से लिखित सम्पादकीय अत्यन्त तर्क-संगत और मननीय है। प्रसन्नता है कि हमारी सरकार तदनुरूप कदम बढ़ाती सत्संकल्प का प्रमाण देती दिखलाई पड़ रही है। 'वेदांजलि' के अन्तर्गत पं.शिवकुमार शास्त्री द्वारा जिस अथर्ववेदीय मंत्र की व्याख्या की गई है, वह आज के लिए सर्वथा उपयुक्त है। राष्ट्र के प्रति समर्पण, त्याग और तप का सन्देश बहुत महत्त्वपूर्ण है।

बिना तप और दीक्षा के राष्ट्रभावना का विस्तार केवल वाचिक अभ्यर्थता का विषय हो सकता है, पर यथार्थ नहीं। 'दयानन्द चरितामृतम्' तो महर्षि दयानन्द जी का जीवनामृत ही है। 'आर्य लोक वार्ता' के २२वें वर्ष के अवसर पर कतिपय महाभागों द्वारा अपने जीवन के अंतिम क्षणों में भी 'आर्य लोक वार्ता' के प्रति जो अनुराग और सम्मान प्रदर्शित किया गया, उसकी झाँकी लिखकर आपने इसकी प्रामाणिक महत्ता का प्रभावी संकेत दिया है। 'शुभाकांक्षा' के अन्तर्गत विभिन्न विद्वानों के अभिमत बड़े प्रेरक हैं। 'अक्षर लोक' स्तम्भ में लोकोपयोगी पुस्तकों की सूचना है। कालजयी रचना के रूप में डॉ.सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार द्वारा 'आर्य संस्कृति के मूल तत्वों' पर अत्यंत गंभीर विचार व्यक्त किये गये हैं। 'व्याख्यान माला' में स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती द्वारा 'दयानन्द और विवेकानन्द' शीर्षक से दोनों महापुरुषों के महान प्रदेय का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। ऐसे व्याख्यान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण हैं- हमें महान संस्कार देने के लिए। 'काव्यायन' में सर्वश्री दयानन्द जड़िया 'अबोध', डॉ.कैलाश निगम, आदरणीया रामा आर्य 'रमा', जयप्रकाश शुक्ल, बाँके बिहारी 'हर्ष' की प्रेरक रचनाएँ हैं। विशेषकर बेनी माधव कृत 'वन्दे मातरम्', स्व.राघवेन्द्र शर्मा त्रिपाठी कृत 'वंदनीय वंदेमातरम्' और (स्व.)सुभद्राकुमार चौहान कृत 'रानी बन आई लक्ष्मीबाई झाँसी में' शीर्षक रचनाएँ अतीव प्रेरणाप्रद हैं। इसके अतिरिक्त सुप्रसिद्ध गीतकार (स्व.) राम स्वरूप 'सिन्दूर' का 'सावन' शीर्षक गीत अपने ढंग का निराला है, जो मादकता की छाप छोड़ने में सर्वथा समर्थ है।

इसके अलावा अन्य विभिन्न कार्यक्रमों के आयोजित होने के समाचार हैं और आर्य समाज के प्रभावी प्रसार के निर्देश हैं। 'आर्य लोक वार्ता' की महत्ता का प्रबल प्रमाण श्री पाल प्रवीण जी की इस स्वीकारोक्ति से मिलता है कि 'आर्य लोक वार्ता ने मेरा जीवन ही बदल दिया।' एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सूचना जो इस पत्र के माध्यम से दी गई है, वह है- डॉ.चन्द्रशेखर लोखण्डे लिखित 'काशी शास्त्रार्थ विजय नाटक' जिसमें १६ नवम्बर १८६९ को हुए दयानन्द सरस्वती एवं काशी के पंडितों के बीच शास्त्रार्थ का प्रामाणिक उल्लेख है। समग्रतः यह अंक भी पूर्व की भाँति ही अनेकात्मक सामग्री से सम्पन्न है। संपादन के प्रति ऐसा समर्पण भाव सर्वथा श्लाघनीय है।

-डॉ.उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ'

पूर्व रीडर, हिन्दी विभाग, जयनारायण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, लखनऊ

***

'आर्य लोक वार्ता' का जून २०१६ नई साज सज्जा के साथ प्राप्त हुआ। अंक हाथ में आते ही सर्वप्रथम दृष्टि गई पृष्ठ आठ के शीर्ष वाम कोण पर प्रकाशित प्रेरणादायी सचित्र समाचार 'होनहार बिरवान के होत चीकने पात' शीर्षक समचार पर, पढ़कर अच्छा लगा और याद आ गई नौ वर्ष पुरानी बात जब वर्ष २०१० में जब मैं बायीं जंघा में हुए अस्थि भंग और उसके 'ऑपरेशन' के पश्चात 'वाकर' लेकर चलता था तब मेरा छोटा पौत्र 'यश जड़िया' दो वर्ष की अवस्था में ठीक इसी प्रकार मेरे साथ वाकर में चलता था और उसी की प्रेरणा से मेरा वाकर छूटा था।

इसी पृष्ठ पर श्री पाल प्रवीण जीके ८४वें जन्म दिवस का समाचार है। इस समाचार में डॉ.वेद प्रकाश आर्य का घनाक्षरी छन्द भी अच्छा है जिसमें 'पाल प्रवीण' से संबन्धित परिवार के समस्त लोगों के नामों का उल्लेख है। पृष्ठ सात पर 'स्वप्न लोक में' महानिर्वाचन नैकृष्ट प्रतिभा अवार्ड, स्वप्नलोक नहीं अपितु पूर्ण वास्तविकता व सत्यता का दामन थामे है। 'काव्यायन' में इस बार मोदी जी की जीत का बोल बाला है। 'प्रेमवर्षा' शीर्षक सम्पादकीय भी अच्छा है जिसमें लघु समाचार पत्रों पर लगने वाले विलम्ब शुल्क को अनुचित करार दिया गया है बात सही भी है। एक दो दिन का विलम्ब क्षमनीय होना चाहिये। मुखपृष्ठ का लेख 'मोदी एवं श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व की समानताएं अचम्भित करती हैं' अच्छा व सभी के लिए पठनीय है।

-दयानन्द जड़िया 'अबोध'

चन्द्रा मण्डप, हाता नूरबेग, सआदतगंज, लखनऊ

***

आर्य लोक वार्ता जून अंक यथासमय प्राप्त हुआ।

आमुख लेख के रूप में 'श्री मोदी और श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व में समानता' विषयक चिन्तन सटीक सार्थक और सम सामयिक है। श्री नरेन्द्र मोदी की देशभक्ति असंदिग्ध है तथा उनके सारथी अमित शाह का राजनीतिक कौशल विलक्षण है, इन दोनों महारथियों की अद्वितीय चुनाव रणनीति का प्रतिफल है कि २०१६ चुनाव में आशातीत सफलता प्राप्त की। योगेश्वर श्रीकृष्ण से मोदी की तुलना से पूर्व कुछ सोचना भी होगा कि दोनों के समक्ष विपक्षी शक्तिप्रदर्शन में भिन्नता थी। श्री मोदी के विपक्षी नेता चुनाव के पूर्व ही हार चुके थे। अभी मोदी जी के समक्ष देश को सुख समृद्ध बनाने के लिए अनेक चुनौतियाँ हैं। आशा है, वे अपने उद्देश्यों में अवश्य सफल होंगे। सम्पादकीय में पत्र के २२ वर्ष पूर्ण होने पर प्रसन्नता पूर्ण समाचार स्वागत योग्य है। निस्सदेह यह पत्र नहीं अपितु मासिक सारस्वत याज्ञिक अनुष्ठान है जिससे प्रबुद्ध वर्ग हृदय से अभिभूत है। प्रेम वर्षा के बीच मंगलकामनाओं का भी अंकुरण होता रहेगा, आपके और पत्र के दीर्घजीवी होने की असीम शुभ वाचना। शुभाकांक्षा, धारावाहिक शृंखला, व्याख्यान, दयानन्द चरितामृतम् तथा काव्यायन पथ के प्राण तत्व हैं जिनमें शाश्वत, चिन्तन मुक्तकंठ से प्रशंसनीय रहता है। पत्र का प्रत्येक अंक संग्रहणीय रहता है जिसका बाद में पढ़ना भी नवीनता का बोध कराता है। विनम्र कामना सहित,

किए प्रतिष्ठित पत्र ने, पूरे बाइस वर्ष।
गौरवशाली है विषय, मन में छाया हर्ष।
पत्रकारिता है नहीं, बच्चों वाला खेल।
दीपक भी जलता तभी, जब उसमें हो तेल।
पत्र भले ही लघु लगे, किन्तु न लघु हो सोच।
क्या रुक जायेगा पथिक, यदि आ जाये मोच।।
ईश्वर से शुभकामना, पत्र बढ़े गतिमान।
डाक्टर वेद प्रकाश जी, हों चिर आयुष्मान।

-गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

117, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ-22

***

(पृष्ठ ३ का शेष...)

'आर्य लोक वार्ता' के उन्नायकों में यदि मैं लखनऊ विश्वविद्यालय, राजनय विभाग की भू.पू.प्रोफेसर डॉ.शान्तिदेव बाला का उल्लेख न करूँ तो लेख अधूरा रह जायगा। डॉ.शान्तिदेव बाला का मेरा प्रथम परिचय उस समय हुआ जब वे भीषण हादसे का शिकार हो चुकी थीं और कई मास घनघोर कष्टपूर्ण आपरेशनों के दौर से गुजर चुकी थीं तथा उनके आग्रह पर श्रीमती इन्द्रा शर्मा एवं कैलाश मडार ने महिला आर्य समाज लालबाग के तत्वावधान में मीराबाई मार्ग स्थित यज्ञशाला परिसर में उनके प्रवचनों का आयोजन किया था। 'आर्य लोक वार्ता' का प्रकाशन भी कुछ ही महीने पहले शुरू हुआ था- अस्वस्थता के बाद अपने प्रवचन में 'आर्य लोक वार्ता' में प्रकाशित वेदमंत्र के काव्यानुवाद की पंक्तियां सुनाईं।

इन पंक्तियों को उनके जैसी विदुषी के मुख से सुनकर मेरी आत्मीयता एवं श्रद्धा उनके प्रति बढ़ गई। आगे चलकर वे जबतक जीवित रहीं- 'आर्य लोक वार्ता' के नये सदस्य बनाती रहीं तथा अपने लेख इत्यादि भी देती रहीं। एक विशेष घटना ने डॉ.शान्तिदेव बाला को 'आर्य लोक वार्ता' के और भी करीब पहुँचा दिया। उनका पी-एच.डी. उपाधि हेतु लिखा गया अंग्रेजी शोध प्रबंध 'Indian Nationality and Swami Dayanand' अप्रकाशित था। इस बृहद् शोध प्रबंध को अंग्रेजी भाषा में होने के कारण कोई प्रकाशक छापने को तैयार नहीं था। इससे वे काफी दुखी थीं। प्रबंध में जितने पृष्ठों में विवेचना थी- उतने ही पृष्ठों में संदर्भ भी थे। वे प्रबंध को संक्षिप्त करने को तैयार नहीं थीं। कोई प्रकाशक न मिलने से व्यथित डॉ.बाला ने मुझसे अपना यह दर्द एक दिन सुनाया। मैंने कहा-'अच्छा, आपका यह दर्द मैं दूर करने का प्रयास मैं करता हूँ।' ईश्वर की कृपा से डॉ.मोहनलाल अग्रवाल के सहयोग से इस ग्रंथ का भव्य और दिव्य प्रकाशन २००५ में प्रसिद्ध प्रकाशक 'शुभि पब्लिकेशन, गुड़गाँव' द्वारा हुआ। अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त यह ग्रंथ लखनऊ वासियों के लिए भी गौरव का विषय है। लखनऊ आर्य समाज के किसी भी लेखक को इस कोटि के ग्रंथ का लेखक होने का सौभाग्य प्राप्त नहीं है। उन्होंने ग्रंथ की प्रस्तावना में मेरे योगदान को भावनापूर्ण शब्दों में व्यक्त किया है-

'My special thanks go to Dr. Ved Prakash Arya, chief editor of 'Arya Lok Varta' Lucknow. Without their keen interst the thesis would not have seen the light of the day and got published.'

डॉ.शान्तिदेव बाला ने संसार से विदा होते होते अपने द्वारा संचालित महिला शक्ति मण्डल का सहयोग सूत्र भी मुझे पकड़ा दिया था। उनके जाने के बाद भी महिला शक्ति मंडल का वसंतोत्सव पर्व मेरे ही आचार्यत्व में सम्पन्न होता है। श्रीमती गीता गुप्ता (अध्यक्ष), वीना गौतम, महेश गोरी शर्मा, रजनी कंसल, कनक वर्मा, नीरू सक्सेना इत्यादि अनेक देवियाँ 'आर्य लोक वार्ता' की सदस्याएँ हैं और सहयोग हेतु तत्पर रहती हैं।

-सम्पादक

आर्य लोक वार्ता जून अंक पाकर प्रसन्नता हुई।

आपके सम्पादकीय की सूचना ने ध्यानाकृष्ट किया कि पत्र को बाईस वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। सचमुच यह आह्लाद का विषय है, इसके लिए आपकी श्रमसाधना स्तुत्य है। वृद्धावस्था में भी आप पत्र के लिए पूर्णतया समर्पित होकर निरन्तर जुटे रहते हैं जिसको समय से प्रेषित करना भी एक समस्या सदैव बनी रहती है, यह चिन्ता कष्टप्रद है तथापि आशा है कि आप निराश नहीं होंगे और पत्र को नियमित प्रदान करते रहेंगे। पत्र आकार में छोटा अवश्य है किन्तु इसमें कोई विज्ञापन नहीं है, अपितु विशुद्ध ज्ञान भरा होता है जिससे व्यावसायिक पत्र-पत्रिकाओं की तुलना में यह अधिक महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ है। आपको और पत्र के दीर्घायु होने की हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित हैं। मोदी और श्री कृष्ण की तुलना दर्शाता लेख अच्छा लगा। मोदी जी से देश को अनेक अपेक्षायें हैं जिनकी पूर्ति निकट भविष्य में उन्हें करना ही चाहिए तभी युगपुरुष की श्रेणी में आ पायेंगे। विनय पीयूष, वेदांजलि, दयानन्द चरितामृतम्, शुभाकांक्षा, वाचनालय से, आर्य संस्कृति के मूल तत्व आदि सभी स्तम्भ महत्वपूर्ण ज्ञान देते हैं। काव्यायन में सभी कवियों की कविताएं मनमोहक और सरस लगीं। आपके सद्प्रयासों के लिए आपको सादर नमन।

-सविता वाणी

मुख्य चौक, गौरीगंज, अमेठी जनपद, उ.प्र.

***

ऋग्वेद के मंत्र 'उपह्वरे गिरीणां संगथे च नदीनाम्। धिया विप्रो अजायत'(८.६.२८)

के अनुसार विप्रगण अपनी साधना द्वारा पवित्र मेधा से प्रभु का योग करके आनन्द की अनुभूति करते हैं और इस पवित्र उपलब्धियों को श्रावण मास में गृहस्थों की बस्ती में जाकर इसी ज्ञान का दान उन लोगों को करते हैं जो ज्ञान गृहस्थ साधकों से ग्रहण करते हैं उन्हें श्रावक और इस माह को श्रावण मास कहते हैं। श्रवण कराने वाले होता, व्यास, गुरु आदि विशेषणों से सम्बोधित किये जाते हैं। इसी क्रिया द्वारा गृहस्थ अतिथि यज्ञ का पुण्य लाभ भी प्राप्त करते हैं। इसी क्रिया को स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज के नियम-३ में परमधर्म बताया है और विप्रों एवं गृहस्थों के लिए अनिवार्य किया है। यही हमारी प्राचीनतम वैदिक परम्परा है। गृहस्थ वैदिक ज्ञान को सुनकर जब पूर्णतः परिपक्व हो जाता है तो वह 'श्रोत्रिय' हो जाता है और पुनः उसका व्यवहार, आचरण सत्य होता है, और वह गृहस्थ सत्याचरण के कारण भद्र पुरुष होता है और इसी लिए अगला माह भाद्रपद कहलाता है क्योंकि अब गृहस्थ सत्य व्यवहार द्वारा अब भाद्रपाद हो चुका है। यदि विप्रों द्वारा ऐसा विधादान न किया जाये तो सर्व संसार में अराजकता, अविद्या, हिंसा एवं नास्तिकता का कुप्रभाव होगा और मानव समाज विषाक्त हो जायेगा। इसी हेतु ऋषिवर दयानन्द ने नियम संख्या ६ में संसार का उपकार करना इस समाज का मुख उद्देश्य बताया है।

-प्रेमचन्द्र शर्मा

15, बहादुर पुर, विकास नगर, लखनऊ

***

धारावाहिक-7 कालजयी रचना

आर्य-संस्कृति के मूल तत्त्व

-डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार-

विचारों के संघर्ष में आर्य-संस्कृति

आर्थिक दृष्टिकोण और उसकी प्रतिक्रियाएँ

संसार जिस दिशा की तरफ बढ़ रहा है, और अबतक जो कुछ हो चुका है अगर वही आने वाले युग का निदर्शक है, तो निश्चयपूर्वक कहा जा सकता है कि समाजवाद से हो, या कम्यूनिज्म से हो-इच्छापूर्वक हो या अनिच्छापूर्वक हो-समझाने-बुझाने से हो, या तोप-बन्दूक और लाठी-तलवार से हो- जब वह जमाना नहीं रह सकता जब कोई व्यक्ति जरूरत से ज्यादा खाता हो और कोई भूखा मरता हो, किसी के पास किसी चीज का बेअन्त हो और कोई हर चीज के लिये तरसता हो। ऐसा युग आ रहा है, आज नहीं तो कल, कल नहीं तो परसों- 'समानी प्रपा सह वो अन्नभागः' का वैदिक-युग आयेगा-इसे कोई रोक नहीं सकता।

आर्थिक-समस्या मनुष्य की पहली पर अन्तिम समस्या नहीं है

यह तो अन्धे को भी दीख रहा है कि आगे आनेवाला युग पूंजीवाद का नहीं होगा, समाजवाद का, कम्यूनिज्म का, समता का और अगर इनसे भी कोई प्रबल विचारधारा उठ खड़ी हुई, तो उसका युग होगा। परन्तु क्या इन वादों के संघर्ष के बाद विचारों का कोई और संघर्ष भी होगा? आर्य-संस्कृति के दृष्टिकोण से विचार करने वालों का उत्तर है कि होगा, और अवश्य होगा। असल में पूंजीवाद, समाजवाद और कम्यूनिज्म में कोई मौलिक भेद नहीं है। ये एक ही भौतिकवादी संस्कृति के कच्चे-बच्चे हैं। कहने को ये एक-दूसरे के शत्रु हैं, परन्तु असल में जीवन के प्रति इन तीनों का दृष्टि-बिन्दु एक ही है। पूंजीवाद का आदर्श पैसा है, समाजवाद का आदर्श पैसा है, कम्यूनिज्म का आदर्श पैसा है। इन तीनों का एक स्वर से कहना है कि पैसे का प्रश्न हल हो गया तो मनुष्य की पूरी-पूरी समस्या का हल हो गया। मनुष्य की असली समस्या आर्थिक है, और उसी का इन्हें हल करना है। भौतिकवादी संस्कृति के इन तीनों वादों के मुकाबिले में अध्यात्मवादी आर्य-संस्कृति का दृष्टिकोण यह है कि आर्थिक समस्या के हल हो जाने पर भी मनुष्य की वास्तविक समस्या हल नहीं हो जाती। मनुष्य इस भौतिक शरीर तक ही समाप्त नहीं हो जाता, भूख-प्यास शान्त कर देने मात्र से उसी शांति नहीं हो जाती। जो-कुछ दीखता है वह सब 'आत्म-तत्त्व' का विकास है-इस मानव-शरीर के पीछे आत्मा है, प्रकृति की ओट के पीछे परमात्मा है। हम शरीर नहीं, आत्मा हैं; संसार की वास्तविकत सत्ता प्रकृति नहीं, परमात्मा है। जीवन के प्रति यह दृष्टिकोण आर्य-संस्कृति का दृष्टिकोण है।यह दृष्टिकोण मानव-जीवन की समस्या को बिल्कुल बदल देता है। आर्य-संस्कृति के इस दृष्टिकोण के अनुसार पूंजीवाद, समाजवाद और कम्यूनिज्म-ये तीनों मनुष्य को पशु के स्तर पर मानकर उसकी समस्या का हल करते हैं, मनुष्य को शरीरमात्र समझते हैं। परन्तु क्या हमारा अनुभव हमें यह बताता है कि हम शरीर के अतिरिक्त कुछ नहीं हैं? शरीर को जैसे भूख-प्यास लगती है, और इस भूख-प्यास को, और शरीर की अन्य वासनाओं को तृप्त करने के लिए जैसे संसार में स्वार्थ का राज्य है, लोग एक- दूसरे के खून के प्यासे फिरते हैं, चारों तरफ छीना-झपटी चल रही है, मत्स्य-न्याय का बोलबाला है, ऐसे ही क्या हमारा यह अनुभव भी नहीं है कि हमें भूख-प्यास के अतिरिक्त, इनसे कोई ऊंची चीज भी लगती है, कभी-कभी दूसरे के दुःख में मर मिटने की तड़पन भी हम में उत्पन्न होती है, कभी-कभी दूसरे का खून लेने के बजाय दूसरे के लिये खून देने की इच्छा भी प्रबल हो उठती है, कभी-कभी स्वार्थ को कुचलकर परार्थ-भावना में हमें अपने जीवन की अधिक पूर्णता दीख पड़ती है। क्या ये अनुभव कभी-कभी हमें अपने ही वैयक्तिक जीवन में नहीं होते? इसके अतिरिक्त क्या यह सत्य नहीं है कि लाखों-करोड़ों में जो व्यक्ति अपने शरीर की पर्वा नहीं करता, भूख-प्यास को भूलकर दूसरों के भले के लिए अपना भला भूल जाता है, सारी दुनियाँ उसकी तरफ सिर उठाकर देखने लगती है, उसे अपना 'हीरो', अपना आदर्श समझने लगती है। बुद्ध, ईसा, दयानन्द, गांधी को क्या हम इसलिये याद नहीं करते क्योंकि वे अपने लिये नहीं, दुनियां के लिये जिये? क्या यह सबकुछ सिद्ध नहीं करता कि यद्यपि हम पैसा बटोरने में लगे हुए हैं, तो भी अपने अन्तरात्मा में, *पैसा बटोरने की अपेक्षा पैसे को छोड़ने को- जान में, अनजान में- ऊंचा आदर्श* समझे हुए हैं। हम आज विश्व-शांति, विश्व प्रेम के नारे लगा रहे हैं। ठीक भी है, ये ही सत्य है, ये ही विश्व की वास्तविक सत्ताएं हैं, मूल-तत्त्व हैं, परन्तु विश्व-शांति और विश्व-प्रेम का इतना शोर मचाने पर भी विश्व में अशांति और द्वेष ही बढ़ रहे हैं- इसका क्या करण है? इसका कारण यही है कि विश्व की आधार-भूत इन मौलिक सत्ताओं के समुद्र की लहरें जब उमड़-घुमड़ कर आती हैं, तब वे आकर भौतिकवाद के हमारे दृष्टिकोण की चट्टान से टकराकर लौट जाती हैं। पूंजीवाद, समाजवाद और कम्यूनिज्म क्या हैं?- ये भौतिकवाद की चट्टानें ही तो हैं जो आर्य-संस्कृति की लहरों को आगे नहीं बढ़ने देतीं, ये वे दीवारें हैं जिनमें आज हम कैदी की तरह बन्द हैं, जो आज मानव को इस शरीरी ही से, शरीर की भूख-प्यास ही से घेरे हुए हैं, शरीर से बाहर उसे झांकने ही नहीं देतीं। हम जबतक इन भौतिकवादों से बंधे रहेंगे, इनमें कैद रहेंगे, इन्हें प्राप्त नहीं कर सकेंगे। नाम तो इसलिये लेते रहेंगे क्योंकि सत्य यही है, यथार्थ यही है, और इसीलिये जब ये सत्ताएं उमड़कर आती हैं, तो अपनी दिव्य-झलक से घोर-से-घोर भौतिकवादी और कट्टर-से-कट्टर नास्तिक को भी विचलित-सा कर जाती हैं, परन्तु भौतिकवादों में जकड़े हुए हम इन मौलिक सत्ताओं को पा इसलिये नहीं सकेंगे क्योंकि यद्यपि आर्य-संस्कृति का अध्यात्मवाद भौतिकवाद को अपना साधन समझता है तथापि भौतिकवाद अध्यात्मवाद के साथ किसी प्रकार का समझौता करने को तैयार नहीं। कोरे भौतिकवाद की दृष्टि में क्यों किसी का भला करूं जबतक वह भला भी मेरे ही भले के लिये न हो, क्यों किसी के लिये मरूं जबतक मेरा मरना मेरे ही जीवन के लिए न हो। संसार के जितने ऊंचे-से-ऊंचे आदर्श हैं वे तभीतक टिक सकते हैं जबकि जीवन के प्रति हमारा आध्यात्मिक हो, आर्य-संस्कृति का हो; पूंजीवाद, समाजवादी या कम्यूनिज्म दृष्टिकोण से वे आदर्श टिक नहीं सकते।

(आर्य संस्कृति के मूलतत्त्व ग्रंथ से साभार, क्रमशः)

व्याख्यान माला-4

दयानन्द और विवेकानन्द

-स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती-

अमेरिका स्वामी दयानन्द के पास आया

महान् व्यक्तियों की तुलना करना मेरा स्वभाव नहीं है। जो भी व्यक्ति मनुष्य के रूप में जन्मा है वह अपूर्ण है, चाहे वह दयानन्द हो, राम, कृष्ण या बुद्ध हो, ईसा या मुहम्मद हो। मैं विवेकानन्द एवं दयानन्द की तुलना नहीं करूँगा। फिर भी कुछ ऐसे तथ्य हैं जो मैं आप लोगों के सामने रखना चाहूँगा। दयानन्द और विवेकानन्द देश के दो विभिन्न क्षेत्रों से आये, एक गुजरात से और दूसरा बंगाल से। दोनों संन्यासी थे, परन्तु दयानन्द संन्यास को पारम्परिक प्रथाओं की उपज थे। परन्तु मुझे नहीं पता कि स्वामी विवेकानन्द व रामकृष्ण मिशन के अन्य सब संन्यासी किस परम्परा के संन्यासी थे। स्वामी दयानन्द अपने युग के संस्कृत या वैदिक साहित्य के सर्वश्रेष्ठ विद्वान थे। उन्होंने पाश्चात्य भाषाओं का अध्ययन नहीं किया था। वे बड़ी मधुर एवं सरल संस्कृत भाषा में बोलते थे। विवेकानन्द अंग्रेजी भाषा धारा प्रवाह बोलते थे। दयानन्द ने आर्य समाज की स्थापना की, उन्होंने इस संस्था का नाम न तो अपने नाम पर और न अपने गुरु विरजानन्द के नाम पर जिन्हें वे बहुत आदर करते थे-रखा। उन्होंने अपने सभी ग्रन्थों, लेखों के अन्त में गुरु विरजानन्द का नाम बड़े आदर के साथ लिया। विवेकानन्द ने जो मिशन स्थापित किया उसका नाम अपने गुरु रामकृष्ण के नाम पर रखा जिन्हें वे बहुत अधिक प्रेम करते थे। दयानन्द ने अपने गुरु से १८६३ में विदा ली। उस समय उन्होंने उनके सामने प्रतिज्ञा की कि मैं अपना सारा जीवन भारत एवं बाहर के लोगों में फैली अविद्या एवं अन्धविश्वास के नाश करने में लगा दूँगा। स्वामी दयानन्द १८६७ के हरिद्वार कुम्भ से प्रसिद्ध हुए, जब उन्होंने वहाँ पाखण्ड खण्डिनी पताका लहराई थी। हरिद्वार का कुम्भ कट्टर पंथियों का सबसे बड़ा मेला था। विवेकानन्द ने शिकागो में अनुशासित, बुद्धिजीवी एवं सभ्य लोगों की सभा में भाषण दिया, परन्तु दयानन्द के श्रोता उजड्ड एवं झगड़ालू किस्म के व्यक्ति थे, जो ऐसे किसी भी सन्देश को सुनने को तैयार नहीं थे जो उन्होंने अब तक नहीं सुना था। एक हिन्दू संन्यासी हिन्दू परम्पराओं के विरुद्ध बोल रहा था। उस स्थान पर जहाँ स्वामी दयानन्द ने पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराई थी, आज मोहन आश्रम स्थित है। वह आर्य समाज द्वारा संचालित एक भव्य संस्था है।

८ वर्ष कार्य करने के बाद स्वामी दयनन्द ने १० अप्रैल १८७५ को बम्बई में आर्य समाज की स्थापना की। उसी वर्ष सितम्बर, १८७५ को कर्नल अल्काट एवं मैडम ब्लैवेट्स्की ने अपने कुछ मित्रों को मैडम के निवास पर बुलाया और आध्यात्मिक विचारों का प्रचार करने के लिये एक संस्था की स्थापना का प्रस्ताव रखा। इसका वास्तविक संविधान बनाने में कुछ समय लगा। १० अक्टूबर, १८७५ को थियोसोफिकल सोसाईटी की स्थापना हुई। कर्नल अल्काट इसके प्रथम अध्यक्ष चुने गये। परन्तु इस संगठन के सदस्यों को अमेरिकन लोगों की ओर से बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। अमेरिकन लोगों को यह नया संगठन पसंद नहीं आया, अतः यह संगठन बड़ी कठिन विपत्ति में फँस गया। इससे इनका ध्यान भारत की ओर गया, परन्तु वे भारत के लिए अजनबी थे। संयोग से उन्हें दो भारतीयों के नाम का पता चला। मूलजी ठाकरसी एवं तुलसीराम। कर्नल अल्काट ने १८७७ में मूलजी ठाकरसी से पत्र-व्यवहार प्रारम्भ किया। पत्र व्यवहार के दौरान मूलजी ठाकरसी ने अमेरिकन लोगों को स्वामी दयानन्द के विषय में बताया जो उस समय भारतीयों में क्रान्तिकारी सुधार का कार्य कर रहे थे। स्वामी दयानन्द परमात्मा एवं आध्यात्मिकता दोनों को पूर्ण समर्पित थे। स्पष्ट है कि विवेकानन्द से पूर्व अमेरिका के लोग स्वामी दयानन्द के विषय में जान गये थे और उस संस्था के प्रतिनिधि भारत में आये थे। वे न केवल स्वामी दयानन्द की सलाह लेने आये थे, अपितु उन्हें उस संस्था का अध्यक्ष भी बनाना चाहते थे।

स्वामी दयानन्द के लिये हिन्दू, बौद्ध, जैन, मुसलमान एवं ईसाई सब एक समान थे। वे सभी धर्मों को सत्य के आधार पर खड़ा करना चाहते थे। वे सारे विश्व को एक ऐसे धर्म के सूत्र में बांधना चाहते थे, जो सभी को समान रूप से स्वीकार्य हो। वेद की शिक्षाएँ भौगोलिक व ऐतिहासिक सीमाओं से बंधी हुई नहीं हैं। इसीलिए स्वामी दयानन्द चाहते थे कि वेदों का सन्देश सारे संसार में फैले। इस उद्देश्य के लिये उन्होंने प्रो.मैक्समूलर व मोनियर विलियम्स से पत्र व्यवहार किया और पं. श्यामजी कृष्ण वर्मा को यूरोप भेजा। विवेकानन्द ने भी अपने जीवन के अन्तिम दिनों में वैदिक कॉलेज की स्थापना के विषय में सोचा, क्योंकि उनकी मान्यताथी कि केवल वैद की शिक्षा ही ऐसी है जिससे मनुष्य अन्धविश्वास से ग्रसित नहीं होगा।

सत्य के मूल्य पर स्वामी दयानन्द को विदेश से किसी भी प्रकार के सम्बन्धों में आकर्षण नहीं था। मैं नहीं जानता ऐसे मामलों में विवेकानन्द के क्या विचार थे। विवेकानन्द एक लचकदार व्यक्तित्व के स्वामी थे, परन्तु स्वामी दयानन्द सत्य के सम्बन्ध में एक दृढ़ चट्टान की तरह थे।

कुछ मामलों में विवेकानन्द एक परम्परा वादी हिन्दू प्रतीत होते हैं। वे हिन्दुओं के मनों से अन्धविश्वास समाप्त करने के लिए वेद पाठशाला या वैदिक कॉलेज स्थापित करने को बहुत उत्सुक थे। परन्तु उनकी वेद सम्बन्धी अवधारणा ऋषि दयानन्द व प्राचीन ऋषियों की अवधारणा से अलग थी। दयानन्द एवं विवेकानन्द दोनों ही अध्यात्म विद्या और धर्म को जोड़ना चाहते थे। दयानन्द ने भारत के विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधियों का मानव मात्र के कल्याण के लिये मिलकर काम करने का आह्वान किया। दयानन्द, मुसलमानों, ईसाइयों, बौद्धों, जैनियों और हिन्दुओं को समान रूप से प्रेम करते थे। वे चाहते थे कि सब लोग एक गोल मेज पर बैठकर अपने मतभेदों को भुलाकर एक साझा कार्यक्रम तैयार करें। विवेकानन्द का उद्देश्य भी यही था, परन्तु उनका मानना था कि तुम मेरा अन्ध विश्वास सहन करो, मैं तुम्हारा अन्ध विश्वास सहन करूँ। तुम मेरे पाखण्ड एवं कपट को सहन करो, मैं तुम्हारे पाखण्डों एवं कपट के विरुद्ध नहीं बोलूँगा। यहाँ दयानन्द विवेकानन्द से अलग हैं। अतः कुछ वर्ग के लिए विवेकानन्द अधिक मान्य हैं अपेक्षाकृत स्वामी दयानन्द के।

स्वामी दयानन्द हर प्रकार की मूर्ति पूजा का विरोध करते हैं। विवेकानन्द

भी मूर्तिपूजक नहीं थे, परन्तु जहाँ दयानन्द इस बुराई का विरोध करने का साहस रखते थे, विवेकानन्द में यह बात नहीं थी। उनके गुरु स्वयं काली के मन्दिर के मुख्य पुजारी थे। अतः स्पष्ट है कि वे मूर्ति पूजा का समर्थन करते थे। एक मूर्तिपूजक होने पर भी यदि उनके गुरु रामकृष्ण परमहंस एक महान् व्यक्ति हो सकते थे, जैसे कि वे थे तो फिर कोई मूर्ति पूजा की निन्दा कैसे कर सकता था?

विवेकानन्द एक विशेष प्रकार के आस्तिक थे। एक ओर उन्हें महान् दार्शनिक शंकराचार्य के अद्वैतवाद में बौद्धिक सान्त्वना मिली, यह वही शंकर थे जिन्होंने भारत से बौद्धधर्म का उन्मूलन किया था। विवेकानन्द के लिए बुद्ध ईश्वर थे। जैसा हमें बताया गया (विवेकानन्द के अनुसार)-कहीं बुद्ध ने अपने शिष्यों को कहा था कि वे ४००-५००वर्ष बाद पुनः मानव रूप में आयेंगे। और कौन जानता है कि वे ही ईसा के रूप में आये होंगे और फिर मुहम्मद के रूप में आये हों। विवेकानन्द को इस बात का बड़ा विश्वास था। उनके लिए बुद्ध एवं ईसा दोनों ईश्वर हैं, दोनों सर्वोच्च हैं। आज जैसा कि वे कहते हैं यह संसार दोनों के बीच बँटा हुआ है। मनुष्य आखिर मुनष्य ही है, वह एक ऐसे ईश्वर को नहीं पूज सकता जो मानव रूप में न हो ऐसा विवेकानन्द कहते हैं। सर्वोच्च सत्ता (सच्चिदानन्द) को कोई भी प्रार्थना समर्पित नहीं की जा सकती। एक व्यक्ति केवल उसकी ही पूजा कर सकता है जो पृथ्वी पर मानव के रूप में आये ऐसे विवेकानन्द के विचार हैं। शायद इनसे पूर्व कोई पूजा नहीं थी, न सन्ध्या- उपासना। मैं विवेकानन्द के साथ तर्क नहीं करना चाहता। वह हिन्दुत्व की अहिन्दुओं के सामने ऐसी तस्वीर पेश करते हैं। वे कृष्ण, बुद्ध एवं ईसा को समानार्थी एवं समतुल्य के रूप में एक ही बताते हैं। उनके आस्तिकता सम्बन्धी विचार वेद, उपनिषद् पर आधारित नहीं हैं, न शंकर, न रामानुज के अनुकूल, न वैष्णव, न शैव के अनुसार, न योग और सांख्य पर आधारित हैं। कृष्ण, बुद्ध एवं ईसा की विशिष्ट मण्डली में वे मुहम्मद को शामिल नहीं करते, मुहम्मद इनसे निम्न स्तर के हैं। यह केवल सन्देशवाहक हैं। विवेकानन्द की ज्ञान मीमांसा का अनुसरण करना आसान नहीं है। आप उनका अध्ययन उनके तरीके से ही कर सकते हैं। मैं यह तो नहीं कहूँगा कि अपने तर्कों में वे परस्पर विरोधी हैं, परन्तु वे वह हिन्दू नहीं हैं जिसे आजकल के हिन्दू महिमा मण्डित कर रहे हैं। और इसलिए विवेकानन्द हिन्दुओं को, ईसाई या मुस्लिम बनने से नहीं बचा सकते। विवेकानन्द ईसा मसीह को प्रेम करते हैं, आदर भी करते हैं, परन्तु किसी भी अवस्था में वे ईसाई नहीं हैं और न ही वे किसी भी कीमत पर ईसाई बनना पसन्द करेंगे। परन्तु यदि कोई हिन्दू ईसाई बनता है तो उन्हें इसमें कोई आपत्ति भी नहीं है। आपको विवेकानन्द को उनके दृष्टिकोण से ही पढ़ना होगा। *('ज्ञान सुधा' से, क्रमशः)*

काव्यायन

पन्द्रह अगस्त

❑गिरिजा कुमार माथुर

आज जीत की रात पहरुए, जागते रहना
खुले देश के द्वार अचल दीपक समान रहना

प्रथम चरण है नये स्वर्ग का, है मंज़िल का छोर
इस जन-मंथन से उठ आई, पहली रतन हिलोर
अभी शेष है पूरी होना, जीवन मुक्ता डोर
क्योंकि नहीं मिट पाई दुख की,विगत साँवली कोर
ले युग की पतवार, बने अंबुधि महान रहना
पहरुए, सावधान रहना

विषम शृंखलाएँ टूटी हैं, खुली समस्त दिशाएँ
आज प्रभंजन बनकर चलतीं, युग-बंदिनी हवाएँ
प्रश्नचिन्ह बन खड़ी हो गयीं, ये सिमटी सीमाएँ
आज पुराने सिंहासन की, टूट रही प्रतिमाएँ
उठता है तूफान, इन्दु तुम, दीप्तिमान रहना
पहरुए, सावधान रहना

ऊँची हुई मशाल हमारी, आगे कठिन डगर है
शत्रु हट गया, लेकिन उसकी, छायाओं का डर है
शोषण से मृत है समाज, कमज़ोर हमारा घर है
किन्तु आ रही नई जिन्दगी, यह विश्वास अमर है
जनगंगा में ज्वार, लहर तुम प्रवहमान रहना
पहरुए, सावधान रहना!

(श्रेष्ठ हिन्दी गीत संचयन से-साभार)

अन्तरिक्ष सम्राट

❑दयानन्द जड़िया 'अबोध'

अन्तरिक्ष-सम्राट भारत बना है बन्धु!
'चन्द्रयान-२' प्रक्षेपण यह बताता है।
प्रगति के पंथ पर, सदा निर्विघ्न बढ़े,
ज्ञान विज्ञान-क्षेत्र से प्रगाढ़ नाता है।
जल व रसायन की, खोज करने में अब,
कैसी चन्द्रयान-२ सफलता दिखाता है।
भारत रहेगा किसी, देश से पीछे नहीं,
दिखेगा 'अबोध' पग, आगे बढ़ाता है।

अन्तरिक्ष मध्य, अन्तरिक्ष में जो मार करे,
ऐसी मिसाइलों के हम ही प्रणेता हैं।
हर चाल शत्रु की सदैव असफल दिखे,
ऐसे कर्मवीर हम, सदा रहे जेता हैं।
विश्व-गुरु भारत अतीत में कहाता रहा,
वही पद पुनः मिले, चाह रहे नेता हैं।
हम तकनीक में न, पीछे कहीं दीख पड़े,
व्योम रंगमंच के, विराट अभिनेता हैं।।

-370/27, हाता नूरबेग, संगमलाल वीथिका, सआदत गंज, लखनऊ

नीति प्रसून

❑रामा आर्य 'रमा'

जान सके तो जानिए, धन की गतियाँ तीन।
प्रथम दान दो भोग है, नाश दशा अति हीन।।
बिन प्रत्यंचा धनुष ज्यों, बाण रहित तूणीर।
भाव हीन नर 'रमा', मानव रूप शरीर।।
बैठे हैं जिस डाल पर, उसे रहे हैं काट।
'रमा' दोष किसका कहें, मन के बन्द कपाट।।
पैसों में जिनका बिका, अपना मान ईमान।
सड़ी गंध से वे 'रमा', मृतक रूप इंसान।।
साहस संयम का 'रमा', कभी न छोड़ो साथ।
मिले आत्मबल से बड़ी, सदा सफलता हाथ।।

रमा सतसई से

-417/10, निवाजगंज, चौक, लखनऊ

कर दिखाया मोदी ने!

❑डॉ. कैलाश निगम

जाति, वर्ग, मजहब में
बंटे रहे हैं लोग
मैल द्वेष घृणा वाला
साफ किया मोदी ने।
जयचंदों, मीरजाफरों व
भ्रष्टाचारियों को
जनता के सामने
कर दिया मोदी ने।
निर्धन सवर्णों को
आरक्षण का लाभ दिया
कुप्रथा तलाक वाली
खत्म किया मोदी ने।
एक देश, एक संविधान
लागू कर दिया
राष्ट्रवादी सोच को
बढ़ावा दिया मोदी ने।।
सपना साकार हुआ
देश की अखण्डता का
देश-प्रेमियों का
मन हरषाया मोदी ने।
धारा तीन सौ सत्तर
पैंतीस ए को हटा
कश्मीर में तिरंगा
लहराया मोदी ने।
सबके विकास हेतु
सबको ही साथ ले के
प्रेम, न्याय, अपनत्व
को बढ़ाया मोदी ने।
केन्द्र-शासित राज्य
अब जम्मू-कश्मीर हुआ
जो भी कहा वह करके
दिखाया मोदी ने।।

-4/522, विवेक खण्ड,, गोमतीनगर, लखनऊ

पाँच अगस्त

❑गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

दो हजार उन्नीस का, अनुपम पाँच अगस्त।
धारा तीन सौ सत्तर का, हुआ सितारा अस्त।।
पाँच अगस्त दिनांक है, ऐतिहासिक शुभ योग।
भारत माँ के शीश का, मिटा माइग्रेन रोग।।
कश्मीरी पण्डितों में, छाया हर्ष अपार।
पूर्ण तपस्या हो गयी, शिव ने सुनी पुकार।।
अब जम्मू कश्मीर से, अलग हुआ लद्दाख।
म्लेच्छ दलों के हो गए, स्वप्न-भवन सब राख।।
ध्वज तिरंगा कश्मीर में, पाएगा सम्मान।
संविधान अनुरूप ही, होगा एक विधान।।
क्रांति पुरुष मोदी तुम्हें, बारम्बार प्रणाम।
भूप विक्रमादित्य सम, किया विश्व में नाम।।
अमित शाह संकल्प सुन, हुए विपक्षी दंग।
दाढ़ी जिनके पेट में, उनके मुख बदरंग।।
पीओके पर अब टिका, भारत माँ का ध्यान।
पूरी होगी साध जब, मिले बलूचिस्तान।।
वर्ष बहत्तर बाद अब, मुक्त हुआ कश्मीर।
अश्रु बने डलझील के, लाल चौक उर-धीर।।

-117, आदिल नगर, विकास नगर, लखनऊ

कालजयी काव्य

कश्मीर : धरा का नन्दन

❑डॉ.वेद प्रकाश आर्य

कश्मीर धरा का नन्दन माना जाता है,
भारती भाल का चन्दन माना जाता है,
पतझर में सरस सुहावन माना जाता है,
या जेठ मास में सावन माना जाता है।

पत्ते-पत्ते पर पावन प्यार यहीं पर है,
वह अमरनाथ वह शालीमार यहीं पर है,
प्रिय प्रकृति परी का रूप अपार यहीं पर है,
है यहीं यहीं सुषमा साकार यहीं पर है।

रस भी है रस से सनी हुई अभिलाषें हैं,
मधु भी है मधु से भीगी भीगी पाखें हैं,
फल भी है फल से झुकी वृक्ष की शाखें हैं,
झीलें भी हैं झीलों से गहरी आँखें हैं।

सरसर करती सतलज की सरस रवानी है,
झिलमिल झिलमिल करता झेलम का पानी है,
लहराती चूनर लहर लहर कर धानी है,
ले रही यहाँ अँगड़ाई मस्त जवानी है।

सुरभित निसर्ग की शोभा का सिन्दूर यहीं ,
है नील नलिन सी नयनों वाली हूर यहीं,
चम चम करते चाँदी के शिखर सुहावन हैं,
मरकत मणियों से बिछी घाटियाँ पावन हैं।

सुन्दरता ने जन जन में रस बरसाया था,
सबसे पहले कश्यप ने इसे बसाया था,
कल्हण कवि की रस प्लावित राज तरंगें थीं,
पौरुष प्रतिमा बन्दा की वीर-उमंगें थीं।

रणजीत सिंह ने बल-विक्रम से पाया था,
देकर 'गुलाब' ने रूप-मरन्द सजाया था,
श्री हरी सिंह ने त्याग मार्ग दरसाया था,
युवराज कर्ण ने 'जनगणमन' अपनाया था।

कश्मीर यहीं संस्कृति की गरिमा जागी थी,
यज्ञाहुति जिसने उष्ण रक्त की मांगी थी,
तब राष्ट्ररथी रणवीरों के अभियान हुए,
कश्मीर यहीं 'श्यामाप्रसाद' बलिदान हुए।

'श्रीनगर' देखकर श्रीपुर भी शरमाता है,
'जम्मू' जो जन में जीवन-ज्योति जगाता है,
है यहीं डोंगरे जिनका गौरव भारी है,
जिनको प्राणों से बढ़ कर मूंछें प्यारी हैं।

कश्मीर यहाँ की कीर्तिकथा अनियारी है,
कश्मीर यहाँ केसर की कुंकुम क्यारी है,
यदि कहें कि भारतमाता द्रुपद दुलारी है,
कश्मीर उसी की सुघर रेशमी सारी है।

(1965 में रचित कविता के सम्पादित अंश)

भारत की शान रखना

❑कुँवर सुखलाल आर्य 'मुसाफिर'

भारत में जन्म लेकर भारत की शान रखना,
अशराफ के लहू का दुनिया में नाम रखना।

जिल्लत की जिन्दगी से मरना है लाख बेहतर,
मर्दों का कौल यह है जां दे के आन रखना।

सख्ती हजार सहकर मरकर भी जन्म लेकर,
तुम खिदमते वतन का दिल में गुमान रखना।

कट जाय जर्रा-जर्रा हक बात से न चूके,
प्यारो दहिन में ऐसी सच्ची जुबान रखना।

मजलूमों बेकसों को अच्छा नहीं सताना,
सैयाद छोड़ दे अब तीरो कमान रखना।

हिन्दोस्तां के हम हैं हिन्दोस्तां हमारा,
इस मंत्र को 'मुसाफिर' विर्दे जुबान रखना।

('सिंह गर्जना' से)

राजस्थान-समाचार

आर्य समाज वैचारिक क्रान्ति का अग्रणी संगठन है

-ओम बिरला

२३ जुलाई, २०१६ को प्रातःकाल दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा व आर्य केन्द्रीय

सभा के अधिकारियों के एक शिष्ट मण्डल ने लोकसभा अध्यक्ष श्रीमान ओम बिरला जी के दिल्ली स्थित उनके निवास पर भेंट की। श्री अर्जुनदेव चड्ढा जी कोटा के नेतृत्व में सतीश चड्ढा महामंत्री आर्य केन्द्रीय सभा, जोगेंदर खट्टर महामंत्री अखिल भारतीय दयानंद सेवा आश्रम, एस.पी.सिंह मंत्री आर्य केन्द्रीय सभा, सुरेंद्र गुप्ता, वेद प्रकाश, बलदेव सचदेवा उत्तर पश्चिमी वेद प्रचार मंडल, नीरज आर्य व राकेश आर्य पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मंडल, किशन आर्य कोटा ने भेंट की। सबसे पहले राजस्थानी साफा व पीत वस्त्र पहनाकर, मोतियों की माला व असमिया टोपी से उनका हार्दिक स्वागत किया गया तथा उन्हें ओम्, एक पीतल का स्मृति चिन्ह भेंटकर अभिनंदन किया गया। इसके उपरान्त अर्जुनदेव चड्ढा ने आर्य प्रतिनिधियों का परिचय श्री ओम बिरला से कराया। श्री बिरला ने कहा कि सभी आर्यों से मिलकर बहुत प्रसन्नता हुई। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा मंडल को संबोधित करते हुए श्री बिरला जी ने कहा कि आर्य समाज वैचारिक क्रांति है तथा युवाओं को महर्षि दयानन्द के विचारों से प्रेरित करात रहता है। पृथ्वी के आखरी मानव तक वेद तथा महर्षि के विचार प्रेरित करते रहेंगे। पर्यावरण शुद्धि हेतु आर्य समाज कोटा की ओर से अर्जुनदेव चड्ढा द्वारा कोटा से लाया गया रुद्राक्ष, अर्जुन तथा आंवले के पौधे लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला को आर्य प्रतिनिधि मंडल की ओर से भेंट किए गए। इसपर श्री ओम बिरला को आर्य प्रतिनिधि मंडल की ओर से भेंट किए गए। श्री ओम बिरला ने कहा कि पर्यावरण संरक्षण के लिए वृक्षारोपण बहुत आवश्यक है। अधिकाधिक वृक्ष लगाकर ही ग्लोबल वार्मिंग के प्रभावों से बचा जा सकता है।

आर्य समाज ने बालिका विद्यालय में किया पौधारोपण

आर्य समाज कोटा एवं जार कोटा के द्वारा राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक

विद्यालय सकतपुरा में पौधारोपण किया गया। पौधारोपण में विद्यालय के अध्यापक सहित बालिकाओं ने बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। कार्यक्रम को सम्बोधित करते हुए आर्य समाज कोटा के पूर्व प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने पौधारोपण के महत्व के बारे में विद्यार्थियों को बताया। उन्होंने वर्तमान में पृथ्वी के बढ़ते तापमान व प्रदूषण की समस्या के निराकरण के लिए अधिक से अधिक पौधारोपण की सलाह दी। उन्होंने कहा कि पेड़ हमारे जीवन भर साथ निभाते हैं। पेड़-पौधों से मिलने वाली ऑक्सीजन हमें प्राणवायु देती है तो वनस्पति व जड़ी-बूटी और औषधियों में पेड़ महत्वकारी हैं। हर वृक्ष ऑक्सीजन की फैक्ट्री है। पेड़ मानव के साथी हैं। हमें पेड़ों को अधिक से अधिक लगाकर उनकी देखरेख करनी चाहिए। इस अवसर पर जर्नलिस्ट ऐसोसिएशन ऑफ राजस्थान के अध्यक्ष हरि वल्लभ मेघवाल, जार कोटा के अध्यक्ष हरिमोहन शर्मा, महासचिव लेखराज शर्मा उपस्थित रहे। विद्यालय की लाइब्रेरी के लिए 'सत्यार्थ प्रकाश' प्रिंसिपल को भेंट किया गया। विद्यालय की ओर से नीलम गुरनानी एवं मधुबाला मेघवाल ने धन्यवाद ज्ञापित किया। *(अर्जुनदेव चड्ढा)*

अनुच्छेद 370 हटी : ऐतिहासिक क्षणों के साक्षी बने पंजाबी समाज के प्रतिनिधि

कोटा, ७ अगस्त। जम्मू कश्मीर को विशेष राज्य का दर्जा देने वाले अनुच्छेद

३७० को केन्द्र सरकार ने समाप्त किया तो पूरा देश हर्ष मना रहा है। अनुच्छेद ३७० को समाप्त करने व जम्मू कश्मीर और लद्दाख को अलग प्रदेश बनाने के लिए लोकसभा में हुई बहस का पंजाबी समाज का प्रतिनिधि मंडल साक्षी बना। पंजाबी समाज समिति के मीडिया प्रभारी अर्जुनदेव चड्ढा ने बताया कि अनुच्छेद ३७० हटना अन्तर्राष्ट्रीय गौरव का विषय है। केन्द्र सरकार ने इस बिल को लोकसभा में रखकर जम्मू कश्मीर राज्य को इससे सदा के लिए मुक्ति दे दी। इस बहस को देखने और सुनने का समाज के लोगों को सौभाग्य प्राप्त हुआ है।

देश के लिए जब ये इतिहास बन रहा था तो पंजाबी समाज इन ऐतिहासिक क्षणों का साक्षी बना। हम यह गर्व से कह सकते हैं कि हमने अनुच्छेद ३७० पर भारत के इतिहास को बनते हुए देखा है। लोकसभा में बहस के दौरान प्रतिनिधियों को हाई सिक्योरिटी गैलरी में जगह दी हुई थी। इस अवसर पर अर्जुनदेव चड्ढा, दर्शन पिपलानी, दीप सेठी, सागर पिपलानी, अनुराग मलिक, देवेन्द्र कुमार गैरा, प्रवीण कुमार बाठला, आर्य समाज दिल्ली के प्रतिनिधि सतीश चड्ढा, रामनारायण कालरा, नरेश गांधी, विजय अरोड़ा, पवन आहूजा समेत कई लोग मौजूद रहे।

सण्डीला-समाचार

डॉ.सत्य प्रकाश ने पेश की पांच सूत्रीय मांग

आर्य समाज सण्डीला के प्रेरणास्रोत

आर्य नेता डा.सत्य प्रकाश ने केन्द्र सरकार का हार्दिक स्वागत किया है। आपने कहा है कि भारत सरकार ने अद्भुत साहस और पराक्रम का परिचय देते हुए एक कठिन किन्तु आवश्यक कार्य करके दिखाया है। आज पूरा राष्ट्र एक सूत्र में बंध गया है। आपने कहा है कि अभी भी कई कार्य बाकी हैं-(१) भारत आर्यों का देश है अतः इसका प्राचीनतम नाम 'आर्यावर्त' बहाल कर देना चाहिए। (२) जातिवाद को पूरी तरह नकारते हुए आर्थिक दृष्टि से कमजोर व्यक्ति, किसी भी जाति का हो उसे आरक्षण का लाभ मिलना चहिए। (३) सर्वहितकारी समाना नागरिक संहिता लागू होनी चाहिए। (४) प्राणि रक्षा आयोग का गठन होना चाहिए। मांसाहार प्रत्येक दृष्टि से हानिकारक है, अतः मांसाहार एवं पशुवध को प्रतिबंधित कर देना चाहिए। (५) संस्कृत सभी भाषाओं की जननी है, अतः संस्कृत का पठन पाठन अनिवार्य होना चाहिए।

आर्य समाज सण्डीला

डॉ.सत्य प्रकाश की सूचना के अनुसार श्रावणी १५ अगस्त से लेकर श्रीकृष्ण जन्माष्टमी तक आर्य समाज द्वारा वेद प्रचार सप्ताह आचार्य पुष्पमित्र शास्त्री के संयोजन में मनाया जा रहा है। आर्य समाज मंदिर के अलावा नगर के विभिन्न परिवारों में यज्ञ, भजन एवं वेदोपदेश की व्यवस्था की गई है।

पत्र वितरण में सुधार

डॉ.सत्य प्रकाश ने कहा है कि यह सन्तोष की बात हे कि अब 'आर्य लोक वार्ता' का प्रतिमास उचित ढंग से डाक विभाग द्वारा वितरण हो रहा है। एतदर्थ डाक वितरक एवं पोस्ट मास्टर सभी धन्यवाद के पात्र हैं। आशा है यह क्रम आगे भी चलता रहेगा।

डॉ.सत्य प्रकाश ने 'आर्य लोक वार्ता' में प्रकाशित सामग्री की प्रशंसा करते हुए कहा है कि मैं पत्र के एक एक अक्षर को पढ़ता हूँ। इतनी उच्च स्तरीय और ज्ञानवर्द्धक रोचक सामग्री अन्यत्र कहीं किसी भी पत्र-पत्रिका में उपलब्ध नहीं है। विशेषकर आर्य लोक वार्ता का सम्पादकीय लेख तो विलक्षण प्रभाव डालने वाला होता है। प्रत्येक अंक और प्रत्येक लेख संग्रह के योग्य हैं।

सहयोग राशि में विलम्ब क्यों?

'आर्य लोक वार्ता' की प्रतियाँ सण्डीला वासियों के पास प्रत्येक मास पहुँच रही हैं तथापि 'आर्य लोक वार्ता' को वार्षिक सहयोग राशि देने में सण्डीला इतना पीछे क्यों है? यह एक चिन्ता का विषय है। इसलिए भी चिन्ता का विषय है कि पुण्य संचित के कारण समृद्धि आती है, और पुण्य के क्षीण होने पर समृद्धि भी चली जाती है। ऐसी दशा में सण्डीला वासियों की समृद्धि की कामना करते हुए हमारा आग्रह है कि 'आर्य लोक वार्ता' की अपेक्षित वार्षिक सहयोग राशि अविलम्ब- डॉ.सत्य प्रकाश जी के पास- प्रकाश होम्यो हाल, सदर बाजार, सण्डीला में पहुँचा दें जिससे स्वाध्याय और पुण्य की यह धारा अवरुद्ध न होने पाये।

आजमगढ़-समाचार

जिन्होंने आजमगढ़ के नाम को रोशन किया

आजमगढ़ जिले के ३० साहित्यकार ऐसे हैं, जिन्होंने विश्व फलक पर आजमगढ़ का नाम स्थापित किया है। जिलाधिकारी नागेन्द्र प्रताप सिंह ने जनपद के ऐसे ३० साहित्यकारों को रेखांकित किया है और उनकी सूची जारी की है। श्री सिंह ने कहा है कि जिन साहित्यकारों ने जनपद के नाम को देश-विदेश में आगे बढ़ाया है; जरूरी है कि आज की पीढ़ी के लोग उन्हें याद रखें और इनसे प्रेरणा लें। ये हैं आजमगढ़ के ३० साहित्यकार- पंडित हरिजू मिश्र, भीखा साहब, पल्टू साहब, नूर मुहम्मद, सुमेर सिंह, चौधरी बद्री नारायण प्रेमधन, पंडित अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध, महापंडित राहुल सांकृत्यायन, आचार्य चन्द्रबली पाण्डेय, पंडित लक्ष्मी नारायण मिश्र, पंडित रामचरित्र उपाध्याय, गुरुभक्त सिंह भक्त, पंडित शांतिप्रिय द्विवेदी, विश्वनाथ लाल शैदा, डा.परमेश्वरी लाल गुप्त, प्रो.भगवती प्रसाद श्रीवास्तव, ठाकुर प्रसाद सिंह अग्रदूत, श्रीराम वर्मा, डा.शिवनारायण लाल श्रीवास्तव, डा.किशोरी लाल गुप्त, डॉ.वेद प्रकाश आर्य, पं.कुबेर मिश्र, डा.त्रिभुवन सिंह, डा.उदयभान सिंह, डा.मुकुन्द देव शर्मा, शिबली नोमानी, डा.एहतेशाम हुसैन, काजी अतहर मुबारकपुरी, अल्लाह इकबाल सुहैल और खलीकुर्ररहमान आजमी खलील।

लखनऊ-समाचार

काव्य गोष्ठी

२१.०७.१६। अखिल भारतीय साहित्य परिषद गोमती नगर के तत्वावधान में डा.विद्यासागर मिश्र 'सागर' के फैजुल्लागंज स्थित आवास पर सरस काव्य गोष्ठी आयोजित की गयी, जिसकी अध्यक्षता डा.शिवमंगल सिंह 'मंगल' ने की। मुख्य अतिथि नरेन्द्र भूषण एवं विशिष्ट अतिथि रवीन्द्र नाथ तिवारी थे। गोष्ठी में नरेन्द्र भूषण की गजल- 'हमारा दिल अंधेरे में, उजाला ढूँढ लेता है', गौरी शंकर वैश्य 'विनम्र' की गीतिका- 'हम भारत के लोग यशस्वी लोकतंत्र के गण हैं' तथा डा.शिव मंगल सिंह की व्यंग्यपूर्ण गीत रचना 'ये आषाढ़ के बाद बादल' को पर्याप्त सराहना मिली। इनके अतिरिक्त रामहर्ष यादव, डा.ऋषिकुमार मिश्र, शरद मिश्र सिन्धु, अशोक शुक्ल अनजान, सुषमा मिश्र, ऋतुराग पाण्डेय, शिवनाथ सिंह, आशीष दीक्षित, अशोक कुमार पाण्डेय अशोक, गोविन्द यादव, राजा भैया गुप्ता राजाभ, सत्येन्द्र तिवारी, रवीन्द्र नाथ तिवारी की विविधवर्गी कविताओं ने रससिक्त किया। अशोक शुक्ल अनजान का उसी दिन जन्मदिवस होने पर सभी ने उन्हें हार्दिक बधाई अर्पित की। गोष्ठी का संचालन शरद मिश्र सिन्धु ने किया। *(विनम्र)*

विनम्र जन्मदिवस पर काव्य संध्या

२५.०७.१६। विनम्र बाल साहित्य संस्थान के तत्वावधान में कवि एवं लेखक

गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' का ६९वाँ जन्मदिवस उनके निवास पर मनाया गया जिसमें डॉ.वेद प्रकाश आर्य, प्रधान सम्पादक, आर्य लोक वार्ता की अध्यक्षता में संगोष्ठी एवं काव्य संध्या आयोजित की गयी। मुख्य अतिथि छन्दकार अशोक कुमार पाण्डेय 'अशोक' तथा विशिष्ट अतिथिद्वय नरेन्द्र भूषण एवं डॉ. चन्द्र भान सिंह 'चन्द्र' रहे। अभ्यागतों ने दीप प्रज्ज्वलन किया और शब्दार्चन किया सम्पत कुमार मिश्र 'भ्रमर' ने। अतिथियों का स्वागत करते हुए 'विनम्र' ने विनम्र बाल साहित्य संस्थान का परिचय दिया तथा सभी साहित्यकारों से बाल साहित्य का संवर्द्धन करने के लिए अनुरोध किया। उन्होंने अपनी आगामी जन्म दिवस उत्सव को 'विनम्र दिवस' के नाम से आयोजित करने का सुझाव दिया। काव्यपाठ के क्रम में अवधेश गुप्त 'नमन', वी.सी.राय 'नया', कार्यक्रम संचालिका शालिनी सिंह, रवीन्द्र नाथ तिवारी, रमाशंकर सिंह, डॉ. कैलाश निगम, घनानन्द पाण्डेय 'मेघ', रामकिशोर तिवारी 'किशोर', डा.चन्द्रभान सिंह 'चन्द्र' आदि कवियों ने काव्यपाठ किया। इसके अतिरिक्त अशोक कुमार पाण्डेय 'अशोक', नरेन्द्र भूषण, डा.विद्याधर द्विवेदी, अंजू शर्मा, शिवनाथ सिंह, विश्वनाथ वैश्य, बी.डी.सिंह सत्य, अशोक शुक्ल 'अनजान', नमिता वैश्य, हरिमोहन वाजपेयी 'माधव' ने सरस काव्यपाठ से रसविभोर किया। कार्यक्रम का संचालन हरिमोहन वाजपेयी 'माधव' तथा रमाशंकर सिंह ने किया। आज के दिन की महिमा पर अध्यक्ष डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने निम्नांकित पंक्तियां पढीं-

वाटिका के फूलों को फिर जिसने महकाया,
आर्य लोक वार्ता की निधि को जन जन तक पहुँचाया।
वर्षा की रिमझिम बूँदों में सुखद जयन्ती आई,
दो हजार उन्नीस धन्य है, धन्य पचीस जुलाई।

प्रश्नोत्तरी की सफलता

'आर्य लोक वार्ता' के गत अंक (जुलाई, २०१६) में जो प्रश्नोत्तरी प्रकाशित हुई थी; उसका हमारे पाठक वर्ग ने हार्दिक स्वागत किया है। अनेक स्वाध्याय शील पाठकों के उत्तर हमें प्राप्त हुए हैं। सभी उत्तरदाताओं को धन्यवाद। प्रश्नोत्तर का सर्वाधिक प्रशंसनीय उत्तर और उत्तरदाता (विजेता) के नाम अगले अंक में प्रकाशित होंगे।

आर्य लोक वार्ता प्रश्नोत्तरी-2

कृपया इस अंक को ध्यानपूर्वक पढ़ें। आठों पृष्ठ देखने के बाद जो विचार या समाचार, लेख, कविता आपको सर्वोत्तम प्रतीत हो, उसकी सूचना हमे आप निम्नांकित माध्यम से इस तरह भेजें कि आपका उत्तर १० सितम्बर, २०१६ तक हमारे पास पहुँच जाय। विजेताओं के नाम अगले अंक में प्रकाशित होंगे। पूर्ववत् यथासमय पुरस्कृत-सम्मानित किया जायगा। पृष्ठ के अंतिम कालम में उल्लिखित ई-मेल द्वारा अथवा व्हाट्सएप नम्बर ८४०००३८४८४ पर पहुँच जाना चाहिए। प्रधान सम्पादक का निर्णय सर्वमान्य होगा।

प्रकाशन के लिए समाचार, शुभाकांक्षा और चित्र इत्यादि भेजने के लिए कृपया हमारी ई-मेल (aryalokvarta@gmail.com) अथवा व्हाट्सऐप नम्बर-8400038484 का उपयोग करें। -व्यवस्थापक

बिन्दी की करामात

हृदय पर शोभित मंगलसूत्र,
भाल पर बिन्दी ललित ललाम।
करों में चूड़ी की झनकार,
कर रही श्रद्धा सहित प्रणाम।
प्रथम संसद में किया प्रवेश,
बदल दी कितनों की तकदीर।
तीन सौ सत्तर धारा रद्द,
कान्तिमय चमक उठा कश्मीर।

लखनऊ-समाचार

स्वास्थ्य सुधार

'आर्य लोक वार्ता' के परम हितैषी, शुभचिंतक, स्वाध्याय और सत्संग प्रेमी सत्यनारायण वेद प्रचार ट्रस्ट के प्रमुख स्तम्भ श्री आर.के.शर्मा कुछ दिनों से गम्भीर रूप में अस्वस्थ चल रहे थे। उनकी चिकित्सा बैंगलेरू में चल रही थी, जहाँ उनके ज्येष्ठ पुत्र एक जानी मानी कम्पनी में सेवारत हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार अब श्री शर्मा के स्वास्थ्य में सुधार परिलक्षित हो रहा है। बेंगलूरू के चिकित्सकों के उपचार से उनकी सेहत सुधर रही है। 'आर्य लोक वार्ता' के प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य को श्री शर्मा ने चलभाष पर बताया है कि मैं शीघ्र ही लखनऊ पहुँच रहा हूँ। 'आर्य लोक वार्ता' परिवार श्री शर्मा की पूर्ण स्वस्थ होने की कामना करता है। *(सुरेश चन्द्र तिवारी)*

सेवाव्रती सतीश निझावन

आर्य समाज आदर्श नगर के पूर्व मंत्री, आध्यात्मिक भजनों के गायक श्री सतीश निझावन ने सेवाभावना का उज्ज्वल आदर्श प्रस्तुत किया है। श्री निझावन के युवा भतीजे श्री अमन अरोड़ा, जो मुम्बई की एक स्टील कम्पनी में इंजीनियर हैं, गत मास मनीला-लेह-लद्दाख में भ्रमण करने गये थे; अचानक लेह में पैर फिलसने के कारण पहाड़ी से नीचे गिर गये और उन्हें गम्भीर चोटें आईं। मुख का जबड़ा बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। उन्हें किसी तरह दिल्ली लाया गया। जहाँ से श्री सतीश निझावन उन्हें लखनऊ लेकर आये। उन्हें के.जी.एम.यू.में भर्ती कराया, जहाँ डाक्टरों ने अमन के जबड़े को जटिल आपरेशन द्वारा दुरस्त किया।

सेवाव्रती श्री निझावन १० दिन लखनऊ में रहे- समय निकाल कर आर्य समाज आदर्श नगर के सत्संग में भी उन्होंने भाग लिया और पुनः गुरुग्राम चले गये। ऐसे सेवाव्रतियों के कारण आज आर्य समाज जीवित है, जाग्रत है।

आर्य समाज चन्द्रनगर द्वारा वेद प्रचार सप्ताह

दि. ८.०८.१६ से ११.०८.१६ तक आर्य समाज चन्द्रनगर, आलमबाग लखनऊ द्वारा वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन समारोह एवं उत्साहपूर्वक सम्पन्न हुआ। आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान् डा.शिव कुमार शास्त्री, प्रधान, आर्य वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर हरिद्वार के वेदोपदेश एवं मशहूर गायक कवि श्री कंचन कुमार के भजन होते रहे। प्रातः एवं सायंकाल दोनों ही सत्रों में भजनों एवं प्रवचनों को आर्य जगत ने रुचिपूर्वक सुना और उससे लाभ उठाया। नित्य प्रातःकाल ७ से ८.१५ तक वैदिक यज्ञ में अतिथि आचार्य के अलावा श्री मनीष जी का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ। जलपान एवं भोजन इत्यादि आतिथ्य सत्कार की व्यवस्था की गई।

रविवार, ११ अगस्त को जिला आर्य सभा का विशेष अधिवेशन श्री नवनीत निगम की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ, जिसमें आचार्य सन्तोष वेदालंकार, डॉ.रूप चन्द्र 'दीपक' के व्याख्यान हुए। मध्यान्ह ऋषि लंगर (प्रीतिभोज) के साथ सप्ताह के कार्यक्रम का समापन हुआ। समस्त कार्यक्रम प्रधान श्री रणसिंह की अध्यक्षता में सम्पन्न हुए। आपने समस्त आगत बन्धुओं और देवियों के प्रति आभार प्रकट किया। मंत्री श्री विद्या सागर बग्गा एवं संरक्षक श्री अरुण विरमानी एवं अमिता विरमानी के संयोजन एवं संचालन में सहयोग हेतु प्रधान जी ने धन्यवाद दिया।

'अवधी की बाल कविताएँ' कृति का विमोचन

७ अगस्त, लखनऊ। श्रीरामलीला समिति ऐशबाग अन्तर्गत तुलसी शोध संस्थान के तत्वावधान में तुलसी सभागर में तुलसी जयन्ती मनायी गयी, जिसकी अध्यक्षता वरिष्ठ कवि डा.शिवभजन 'कमलेश' ने की। मुख्य अतिथि प्रो.जयलक्ष्मी शर्मा ने अपने उद्बोधन से अवधी को विश्व में लोकप्रिय भाषा बताते हुए इसके प्रचार प्रसार के लिए साहित्यकारों का आह्वान किया। मुख्य अभ्यागत राजर्षि शुक्ला ने कहा कि अवधी का जीवन और जगत का अटूट नाता है। पं.आदित्य द्विवेदी ने अभ्यागतों से समिति के सुझाव अनुसार अवधी अकादमी गठित करने की माँग की जिसका सभी ने भरपूर समर्थन करते हुए अपेक्षित सहयोग देने का आश्वासन दिया।

इस अवसर पर साहित्यकार श्री गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' की कृति 'अवधी की बाल कविताएँ' का विमोचन अतिथियों द्वारा किया गया तथा कृतिकार को अवधी में बाल कविता सृजन पर बधाई एवं शुभकामनाएँ प्रदान कीं। कार्यक्रम में डा.ज्ञानवती दीक्षित (सीतापुर) तथा डा.चन्द्र प्रकाश पाण्डेय (रायबरेली) को 'तुलसी गौरव सम्मान' तथा डा.शिवभंजन 'कमलेश' को 'संत तुलसी सम्मान' से विभूषित किया गया। इस अवसर पर अवधी कवि सम्मेलन का भी आयोजन किया गया जिसका संचालन डा.अशोक अज्ञानी ने किया। वाणी वन्दना मनोज अवस्थी 'शुकदेव', ने की। डा.नीलम रावत, फारुख सरल, समीर शुक्ल, ताराचन्द 'तन्हा', आशीष अनल, आदित्य द्विवेदी, डा.अरविन्द झा, डा.चन्द्र प्रकाश पाण्डेय, शिवभजन 'कमलेश' ने अपने काव्यपाठ से श्रोताओं की वाहवाही लूटी। सचिव पं.आदित्य द्विवेदी के आभार ज्ञापन के बाद कार्यक्रम का समापन अवधी व्यंजन भोज के साथ हुआ। *('विनम्र')*

टाण्डा-समाचार

श्री मिश्रीलाल आर्य का स्वप्न हुआ साकार

धारा 370 रद्द होने से टाण्डा में हर्ष की लहर

मिश्रीलाल आर्य कन्या इन्टर कालेज एवं डी.ए.वी.एकेडमी टाण्डा द्वारा इस वर्ष स्वतंत्रता दिवस विशेष हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। छात्र-छात्राओं की विशेष परेड का अभिवादन एस.डी.एम. ने स्वीकार किया। एस.डी.एम. ने ध्वजारोहण के साथ ही छात्र-छात्राओं को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ दीं। कालेज परिसर में राष्ट्रीय पताका फहराई गई, राष्ट्रगान के साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुए तथा मिष्ठान्न वितरण किया गया। प्रधानाचार्या डॉ.प्रशिषा एवं प्रधानाचार्या श्रीमती अनीता सिंह ने आजादी के इस पावन पर्व पर सभी को बधाई दी। उल्लास हर्ष के इस अवसर पर रात्रि में विद्यालय परिसर में गण्यमान व्यक्तियों को आमंत्रित किया गया तथा प्रीतिभोज का आयोजन किया गया।

शिक्षक-शिक्षिकाओं एवं कालेज के कर्मचारी मण्डल के सदस्यों को सम्बोधित करते हुए मुख्य प्रबंधक श्री आनन्द कुमार आर्य ने कहा कि आज का दिन इसलिए और भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि कालेज के संस्थापक आजादी के संघर्ष के दुर्द्धर्ष योद्धा श्रद्धेय मिश्रीलाल आर्य का स्वप्न आज मूर्त रूप ले रहा है। बाबू जी को कश्मीर में धारा ३७० खटकती रहती थी और वे उस क्षण की प्रतीक्षा में थे जिस क्षण धारा ३७० रद्द हो। इस बार १५ अगस्त से पूर्व ही इस महत्त्वपूर्ण सफलता से भारत की एकता और अखण्डता का मार्ग साफ हो गया है। इस महत्त्वपूर्ण उपलब्धि के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के साथ गृहमंत्री श्री अमित शाह दोनों ही देशवासियों की बधाई और धन्यवाद के अधिकारी हैं। गाँधी-नेहरू की भूल को ७० वर्ष बाद मोदी ने सुधार कर अद्भुत शौर्य और पराक्रम का परिचय दिया है। श्री अमित शाह ने भू.पू. गृहमंत्री सरदार पटेल की दृढ़ता की याद ताजा कर दी है।

श्री आनन्द कुमार आर्य ने बताया कि इस वर्ष १६, १७ नवम्बर को मिश्रीलाल आर्य कन्या इंटर कालेज की स्थापना के ७५ वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में कौस्तुभ जयन्ती समारोह का आयोजन किया है। यह अपने ढँग का विशिष्ट समारोह होगा। इस अवसर पर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी तथा उप मुख्यमंत्री डॉ.दिनेश शर्मा को आमंत्रित किया जा रहा है।

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका स्मारक का विधिवत पंजीकरण

सरयूबाग, अयोध्या की जिस पुण्यभूमि पर बैठकर युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज ने अपने जीवन के प्रमुख उद्देश्य वेदभाष्य की रचना का शुभारंभ किया था और वेदभाष्य की प्रस्तावना के रूप में एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण ग्रंथ 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' का लेखन कार्य पूर्ण किया था- उसी पुण्य भूमि पर वेद भाष्य स्मारक के निर्माण का कार्य प्रगति की ओर अग्रसर हो रहा है।

वेदभाष्य स्मारक निर्माणा न्यास के संयोजक कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य ने जानकारी दी है कि उक्त स्थान की रजिस्ट्री (पंजीकरण) का कार्य १३ अगस्त २०१६ को विधिवत् पूर्ण हो गया है। स्मारक निर्माण में अपने सहयोग द्वारा जो पुण्य लाभ प्राप्त करना चाहते हैं- वे दनदाता कृपया श्री आनन्द कुमार आर्य से सम्पर्क स्थापित कर सकते हैं। *(आनन्द चौधरी, एडवोकेट)*

सुषमा स्वराज भारतीय नारी शक्ति की प्रतीक थीं

कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य ने भारत की पूर्व विदेश मंत्री, जन जन की प्रिय नेत्री श्रीमती सुषमा स्वराज के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए श्री आनन्द कुमार आर्य ने कहा कि श्रीमती स्वराज नारी शक्ति, मर्यादा, शालीनता और तेजस्विता की साकार प्रतिमा थीं। दर असल कश्मीर में धारा ३७० को रद्द करने का वातावरण तैयार करने में उनके अतुलनीय योगदान को कभी भी भुलाया नहीं जा सकेगा। २००२ में हरिद्वार, गुरुकुल कांगड़ी में आयोजित आर्य महासम्मेलन में महिला सम्मेलन की श्रीमती सुषमा स्वराज मुख्य अतिथि थीं। अपनी विद्वत्तापूर्ण वक्तृता से उन्होंने सभी को मुग्ध कर दिया था।

सदन की सुषमा चली गई.....!

है, स्वराज स्तब्ध!
सदन की सुषमा
चली.....गई!

चौड़ी माँग गोल सा सूरज,
लाल सुर्ख माथे पर
लेकर,
नील निलय में लाल
कृष्ण की,
बिटिया चली गई।।
है स्वराज.....।

नहीं बांसुरी की पुकार
अब,
उसे बुला पायेगी।
भैया वैंकैया की राखी,
सूनी रह जाएगी।

उत्साही निर्भीक प्रखर
व वक्ता चली गई।
है स्वराज.....।

छोटा कद था,
किंतु विराट था,
अंतर मन, माथा,
हामिद की प्यारी
अम्मी थी,
गीता की माता।
जाति धर्म से ऊपर उठकर,
चिड़िया चली गई।
है स्वराज.....।

वहां जहां से इस दुनियां
में,
कोई कब आया?
सुख ही सुख है, नहीं
रोग,
ना औषधि ना काया।
नव धारा की जटिल कहानी,
कहने चली गई।।

–श्रीश रत्न पाण्डेय
बसंत कुंज, बालागंज, लखनऊ

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

संरक्षक एवं निर्देशक
कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य

प्रधान संपादक
डॉ० वेद प्रकाश आर्य
कार्यालय-638/181डी,
शिवविहार कालोनी, पो.-सीमैप,
पेकनिक स्पाट रोड, लखनऊ-226015
9450500138

संपादक (अवैतनिक)
आलोक वीर आर्य
: 8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
: 9651333679

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
: 9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
: 9450500138

विशेष कार्याधिकारी
श्रीमती निमिषा वाजपेयी
: 7310119999

नवोन्मेष
कृष्णा जी, पिंटेक

ई-मेल
aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	–	100 रु. वार्षिक
होता सदस्य	–	1,500 रु. वार्षिक
संरक्षक	–	15,000 रु.
प्रतिष्ठापक	–	50,000 रु.

सहयोग राशि निम्नलिखित बैंक की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है–

बैंक–बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC - BARBOVIBHAV
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं. – 46900 1000 00651

प्रतिष्ठापक
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार
डॉ. रजत बत्रा, लखनऊ

संरक्षक
~~श्रीमती बलबीर कपूर, लखनऊ~~
श्रीमती मिनी स्वरूप, नई दिल्ली
श्रीमती मधुर भण्डारी, नई दिल्ली
श्रीमती कमलेश पाल, लखनऊ,
कर्नल पाल प्रमोद, मेरठ
आचार्य आनन्द मनीषी, लखनऊ
पं.ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी, लखनऊ
श्रीमती रामा आर्य 'रमा', लखनऊ
श्री सर्वमित्र शास्त्री, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई

सलाहकार
श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, लखनऊ

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी–2, हिमांशु सदन, 5–पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान' 539क/234 हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.–इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।